HANDWRITTEN NOTES

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO



LATEST EDITION

राजस्थान P.T.I. (2nd GRADE)

(R.P.S.C.)

(वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)

भाग -2

सामान्य ज्ञान (भारत+विश्व) + राजव्यवस्था + शिक्षा मनोविज्ञान + विविध

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान P.T.I.

(Second Grade)

(वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)

2022

पेपर –I

भाग – 2

सामान्य ज्ञान (भारत+विश्व) + राजव्यवस्था + शिक्षा मनोविज्ञान + विविध

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान P.T.I. (वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)" (2nd Grade)*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान P.T.I. (वरिष्ठ शारीरिक शिक्षा अध्यापक)" (2nd Grade)*** *भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

नोट्स खरीदने के लिए ⬇

Whatsapp करें - https://wa.link/nc3moh

या

Online order करें - https://bit.ly/pti-2nd-notes

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम (2022)

विश्व भूगोल

1. महाद्वीप, महासागर और उनकी विशेषताएं	1
2. वैश्विक पवन प्रणाली	16
3. पर्यावरणीय मुद्दे और रणनीतियाँ	19
4. वैश्वीकरण और इसके प्रभाव	39
5. जनसंख्या वितरण और प्रवास	42

भारत का भूगोल

1. स्थिति-विस्तार एवं भौतिक विशेषताएं	49
2. मानसून प्रणाली	60
3. जल निकासी (अपवाह तंत्र) नदियाँ एवं झीलें	64
4. वनस्पति	72
5. ऊर्जा संसाधन	78

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. कृषि में वृद्धि और विकास	87

2. भारत में उद्योग और सेवा क्षेत्र 100

3. राष्ट्रीय आय और उत्पाद 106

4. बैंकिंग 111

5. केंद्र सरकार की योजनाएँ 129

भारतीय संविधान

1. 1919 और 1935 के भारत सरकार अधिनियमों के विशेष संदर्भ में भारत का संवैधानिक इतिहास 134

2. राष्ट्रीय आंदोलन में गाँधी का योगदान 135

3. संविधान निर्माण में अम्बेडकर की भूमिका 140

4. भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएं 142

5. मौलिक अधिकार 144

6. मौलिक कर्तव्य / मूल कर्तव्य 153

7. राज्य की नीति के निदेशक सिद्धांत 155

8. भारतीय राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री 158

9. भारत का संघीय सिस्टम भारतीय संसद 193

10. राजनीतिक दल और दबाव समूह 199

11. भारत की विदेश नीति के सिद्धांत और इसके निर्माण में नेहरू का योगदान 203

12. भारत एवं वैश्विक रणनीति 205

13. भारत और संयुक्त राष्ट्र संघ 219

शिक्षा मनोविज्ञान 225 – 340

1. शिक्षा मनोविज्ञान का परिचय

2. कक्षा में अध्यापकों की भूमिका

3. बाल विकास शिक्षार्थी का विकास

4. अधिगम) सीखना)

5. व्यक्तित्व

- समायोजन एवं कुसमयोजन

6. बुद्धि एवं सृजनात्मकता

7. अभिप्रेरणा

8. व्यक्तिगत विभिन्नताएं

- पिछड़े ,प्रतिभाशाली , सवेंदनशील इत्यादि बच्चे

9. शिक्षण अधिगम

10. समावेशी शिक्षा

11. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना - 2005

12. आकलन, मापन एवं मूल्यांकन

13. शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009

14. भारत की नई शिक्षा नीति 2020

15. अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

16. अभिरुचि, स्मृति, चिंतन एवं कल्पना

राजस्थान विविध (महत्वपूर्ण तथ्य) 341 - 380

अध्याय – 2

वैश्विक पवन प्रणाली

विश्व की प्रमुख स्थानीय पवनें, प्रकृति एवं उनके स्थान: :-

स्थानीय पवनें किसे कहते हैं?

स्थानीय धरातलीय बनावट, तापमान एवं वायुदाब की विशिष्ट स्थिति के कारण स्भावतः प्रचलित पवनों के विपरीत प्रवाहित होनें वाली पवनें "स्थानीय पवनों" या "स्थानीय हवाएँ" (local winds) के रूप में जानी जाती हैं। इनका प्रभाव अपेक्षाक्रत छोटे छेत्रों पर पडता हैं। ये क्षोभमण्डल (Troposphere) की सबसे नीचे की परतों तक सीमित रहती हैं।

नोट: क्षोभमण्डल पृथ्वी के वायुमंडल का सबसे निचला हिस्सा होता है।

व्यापारिक पवनें किसे कहते हैं?

दक्षिणी अक्षांश के क्षेत्रों अर्थात उपोष्ण उच्च वायुदाब कटिबंधों (Subtropical high Pressure zone) से भूमध्य रेखीय निम्न वायुदाब कटिबंध (Equatorial low Pressure zone) की ओर दोनों गोलार्द्धों में वर्ष भर निरन्तर प्रवाहित होने वाले पवन को व्यापारिक पवन (Trade winds) कहा जाता हैं। ये पवन वर्ष भर एक ही दिशा में निरन्तर बहती हैं। सामान्यतः इस पवन को उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तर से दक्षिण दिशा में तथा दक्षिण गोलार्द्ध में दक्षिण से उत्तरी दिशा में प्रवाहित होना चाहिए, किन्तु फेरेल के नियम (Ferrel's law) एवं कोरोऑलिस बल के कारण " ये हवाएं पृथ्वी की गति के कारण उत्तरी गोलार्द्ध में दाहिनी ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बायीं ओर मुड़ जाती हैं।"

व्यापरिक पवनों की विशेषताएं:

- व्यापरिक पवनों को अंग्रेज़ी में 'ट्रेड विंड्स (Trade winds)' कहते हैं। यहाँ 'ट्रेड' शब्द जर्मन भाषा से लिया गया है, जिसका तात्पर्य 'निर्दिष्ट पथ (Specified way)' या 'मार्ग' से है। इससे स्पष्ट है कि ये हवाएँ एक निर्दिष्ट पथ पर वर्ष भर एक ही दिशा में बहती रहती हैं।
- उत्तरी गोलार्ध में ये हवाएँ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती हैं। वहीं दक्षिणी गोलार्ध में इनकी दिशा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर होती है।
- नियमित दिशा में निरंतर प्रवाह के कारण प्राचीन काल में व्यापारियों को पाल युक्त जलयानों के संचालन में इन हवाओं से काफ़ी मदद मिलती थी, जिस कारण इन्हें व्यापारिक पवन कहा जाने लगा था।
- भूमध्य रेखा के समीप दोनों व्यापारिक पवन आपस में मिलकर अत्यधिक तापमान के कारण ऊपर उठ जाती हैं तथा घनघोर वर्षा का कारण बन जाती हैं, क्योंकि वहाँ पहुँचते-पहुँचते ये जलवाष्प से पूर्णतः संतुष्ट हो जाती हैं।
- व्यापारिक पवनों का विश्व के मौसम पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है।

➢ **चिनूक**

पर्वतीय ढाल के सहारे चलने वाली गर्म व शुष्क हवा है जो संयुक्त राज्य अमेरिका मे चलती है। यह पवन रॉकी पर्वत की पूर्वी ढाल में कोलारेडो से उत्तर में कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया तक चलती है । इस हवा का औसत तापक्रम 40 डिग्री फा० होता हैं। इस हवा के आगमन से तापक्रम मे अचानक बढ़ने लगती है तथा कभी-कभी तो तापमान मिनटों में 34 डिग्री फा० तक बढ़ जाती है जिसके फलस्वरुप धरातल पर बर्फ अचानक पिघलने लगती है। यह पशु पालकों के लिये लाभ दायक होती क्योंकि इससे बर्फ पिघल जाती हैं और घास उग जाती हैं। इस कारण इस पवन को हिमभक्षी भी कहते हैं।

➢ **फॉन**

यह आल्पस पर्वत के उत्तरी ढाल से नीचे उतरने वाली गर्म एवं शुष्क हवा हैं। इसका सर्वाधिक प्रभाव स्विटजरलैण्ड में होता हैं।

➢ **सिरोको**

यह सहारा मरुस्थल में भुमध्य सागर की ओर चलने वाली गर्म हवा हैं। सहारा मरुस्थल से इटली में प्रवाहित होने वाली सिराँको हवा बालू के कणों से युक्त होती हैं, तथा सागर से नमी धारण करने के बाद जब इटली में वर्षा करती हैं तो इन बालू के कणों के कारण वर्षा की बूंदे लाल हो जाती हैं। इस प्रकार की वर्षा को इटली में रक्त की वर्षा कहतें हैं।

➢ **सिमूम**

यह अरब के मरुस्थल में चलने वाली गर्म एवं शुष्क हवा हैं।

- **हरमट्टन**

हरमट्टन सहारा मरुस्थल से दक्षिण पश्चिम दिशा में चलनें वाली गर्म तथा शुष्क हवा हैं। हरमट्टन के आने से अफ्रीका का उष्ण पश्चिमी तट सुहावना हो जाता हैं। हरमट्टन ट्वी भाषा के शब्द "हरमाटा" से लिया गया हैं।[3] इसी प्रभाव के कारण गिनी तट पर इस हवा को डाक्टर वायु के नाम से जाना जाता हैं क्योंकि यह वायु इस क्षेत्र के निवासियों को आर्द्र मौसम से राहत दिलाती हैं। इस प्रकार की पवन को उत्तरी अमेरिका में ब्लैक रोलर व फारस की खाड़ी के उत्तर-पूर्व में शामाल कहा जाता हैं। इस हवा से फसल को नुकसान का खतरा होता हैं।

- **ब्रिकफिल्डर**

यह आस्ट्रेलिया के विक्टोरिया राज्य में चलने वाली गर्म एंव शुष्क हवा हैं।

- **साण्टा आना**

साण्टा आना हवाएं मजबूत, बेहद शुष्क डाउन - ढलान वाली हवाएं हैं जो अंतर्देशीय उत्पत्ति करती हैं । वे ग्रेट बेसिन में ठंडा, सूखे उच्च दबाव वाले वायु द्रव्यमान से निकलते हैं। सांता आना हवाओं को गर्म, सूखे मौसम के लिए जाना जाता हैं जो वे शरद ऋतु (अक्सर साल के सबसे गर्म) में लाते हैं, लेकिन वे वर्ष के अन्य समय में भी पैदा हो सकते हैं। यह कम आर्द्रता, गर्म, संपीड़ित-गर्म हवा द्रव्यमान के साथ संयुक्त, उच्च हवा की गति, गंभीर आग मौसम की स्थिति पैदा करते हैं।यह "शैतान हवाओं" के रूप में भी जाना जाता हैं सांता आना क्षेत्रीय जंगल की आग को फैन करने के लिए कुख्यात हैं। साण्टा आना दक्षिणी कैलिफोर्निया में साण्टा आना पवन यह दक्षिणी कैलिफोर्निया राज्य (संयुक्त राज्य अमेरिका) में घाटी से चलने वाली गर्म तथा शुष्क पवन हैं ।

- **नारवेस्ट**

यह न्यूजीलैण्ड में उच्च पर्वतों से उतरने वाली गरम, शुष्क तथा धूल भरी हवा हैं।

- **शामल**

यह मेसोपोटामिया (इराक) तथा फारस की खाडी में चलने वाली गर्म तथा शुष्क उत्तर-पूर्वी हवा हैं।

- **मिस्ट्रल**

यह रोनघाटी (फ्रांस) में जाड़े में चलने वाली ठंडी हवा हैं।

- **बोरा**

यूगोस्लाविया के एड्रियाटिक तट पर चलने वाली ठंडी हवा। एड्रियाटिक सागर के पूर्वी किनारों पर और इटली के उत्तरी भाग में जाड़े में उत्तर-पूर्व से चलने वाली ठंडी हवाओं को बुरा कहा जाता हैं स्थल से चलने के कारण यह हैं वशिष्ठ और ठंडी होती हैं

- **सिस्टन**

यह पुर्वी ईरान के सिस्टन राज्य में ग्रीष्म काल में चलने वाली तीव्र उत्तरी हवा हैं, जिसकी गति कभी-कभी 110 कि० मी० प्रति घन्टा तक हो जाती हैं। इसे 120 दिन की पवन भी कहा जाता हैं।

- **नेवाडोज**

यह दक्षिणी अमेरिका के एण्डीज पर्वतीय हिम क्षेत्रों से इक्वेडोर की उच्च घाटियों में नियमित रूप से प्रवाहित होने वाली हवा हैं, जो एक एनाबेटिक हवा हैं। यह पर्वतीय वायु रात्रि-विकिरण बर्फ के सम्पर्क से ठण्डी हो जाने के कारण ढालों से नीचे की ओर प्रवाहित होती हैं।

- **फ्राइजेम**

यह ब्राजील के उष्णटिबन्धीय कैम्पोज क्षेत्र में प्रति चक्रवात उत्पन्न हो जाने के कारण आने वाली तीव्र शीत-लहर हैं, जो मई या जून के महिनों में प्रवाहित होकर इस क्षेत्र के तापमान को 10 डिग्री सेण्टिग्रेड तक घटा देती हैं

- **बर्गस**

यह दक्षिणी अफ्रीका में जाड़ें में चलने वाली गर्म हवा हैं, जो आन्तरिक पठार से तटीय भाग की ओर चलती हैं।

- **पोनेन्टी**

यह भूमध्य सागरीय क्षेत्रों विशेषकर कोर्सिको तट तथा भूमध्य सागरीय फ्रांस में चलने वाली शुष्क तथा ठंडी धारा हैं।

- **पैम्परो**

यह अर्जेण्टीना तथा यूरुगुए के पम्पास क्षेत्र में चलने वाली रैखिय प्रचण्ड वायु हैं।

- **टेरल**

यह पेरु एवं चिली के पश्चिमी तटों पर चलने वाली पवन हैं।

निर्माण करती हैं। इस ध्रुवीय भँवर के भीतर निचली समताप मण्डलीय ओज़ोन का 50% से अधिक अंटार्कटिक बसंत के दौरान नष्ट हो जाता है।

जैसा कि ऊपर उल्लिखित है, ओज़ोन अवक्षय का प्रमुख कारण क्लोरिन युक्त गैसों (मुख्य रूप से सीएफ़सी और संबन्धित हैलोकार्बन) की उपस्थिती है। परबैंगनी किरणों की उपस्थिती मे, ये गैसे अपघटित हो कर क्लोरिन अणुओ कों मुक्त करती है, जो ओज़ोन के विनाश के लिए उत्प्रेरित करती हैं। क्लोरिन, उत्प्रेरित ओज़ोन अवक्षय गैसीय अवस्था मे हो सकता है, लेकिन ध्रुवीय समताप मंडलीय बादलो की उपस्थिती मे इसमे नाटकीय रूप से वृद्धि होती है।

ये ध्रुवीय समताप मंडलीय बादल (पीएससी) भीषण ठंढ मे सर्दियों के दौरान बनते हैं। ध्रुवीय सर्दिया 3 महीने तक बिना सौर्य विकिरण (धूप) के अंधकारमय होती हैं। सूर्य के प्रकाश मे कमी की वजह से तापमान मे गिरावट और ध्रुवीय भंवर के जाल और हवा को ठंढा करती हैं। और जब बसंत आता है तब सूर्य का प्रकाश एक उत्प्रेरक के रूप मे कार्य करता है और रसायनिक प्रतिक्रिया मे सहायता करता है जिसके परिणाम स्वरूप ओज़ोन छिद्र का निर्माण होता है।

ओज़ोन परत अवक्षय के परिणामः

- परबैंगनी किरणों की पृथ्वी पर वृद्धि
- बेसल और पपड़ीदार कोशिका कैंसर – मानव मे कैंसर का एक सबसे सामान्य रूप।
- घातक मेलानोमा – अन्य प्रकार का त्वचा कैंसर।
- कोर्टिकल मोतियाबिंद।
- परबैंगनी किरणों की वृद्धि से फसलों के प्रभावित होने की संभावना हैं। पौधो के आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण विभिन्न प्रजातियों मे जैसे कि चावल साइनोबैक्टीरिया पर निर्भर रहता है जो नाइट्रोजन के धारण के लिए इसकी जड़ो मे रहता हैं। साइनोबैक्टीरिया परबैंगनी किरणों के प्रति संवेदनशील होते हैं और इसकी वृद्धि के परिणाम स्वरूप प्रभावित हो सकते हैं।

● पर्यावरणीय रणनीतियाँ

भारतीय संविधान को 1950 में लागू किया गया लेकिन यह संविधान सीधे तौर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रावधानों से नहीं जुड़ा था। इसलिए सन् 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन ने भारत सरकार का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर दिया । सरकार ने 1976 में संविधान में संशोधन कर दो महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद 48 ए तथा 51 ए (जी) जोड़ें। अनुच्छेद 48 ए राज्य सरकार को निर्देश देता है कि वह 'पर्यावरण की सुरक्षा और उसमें सुधार सुनिश्चित करे, तथा देश के वनों तथा वन्यजीवन की रक्षा करें'। अनुच्छेद 51 ए (जी) नागरिकों को कर्तव्य प्रदान करता है कि वे 'प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करे तथा उसका संवर्धन करे और सभी जीवधारियों के प्रति दयालु रहे'।

पर्यावरण की गुणवत्ता की इस कमी में प्रभावी नियंत्रण व प्रदूषण के परिप्रेक्ष्य में सरकार ने समय-समय पर अनेक कानून व नियम बनाए।

पर्यावरणीय कानून व नियम निम्नलिखित हैं:

- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986
- जलु प्रदूषण संबंधी-कानून
- रीवर बोर्डस एक्ट, 1956
- जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974
- जल उपकर (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1977
- वायु प्रदूषण संबंधी कानून
- फैक्ट्रीज एक्ट, 1948
- इनफ्लेमेबल्स सबस्टा<सेज एक्ट, 1952
- वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981
- भूमि प्रदूषण संबंधी कानून
- फैक्ट्रीज एक्ट, 1948
- इण्डस्ट्रीज (डेवलपमेंट एंड रेगुलेशन) अधिनियम, 1951
- इनसेक्टीसाइडस एक्ट, 1968

- अर्बन लैण्ड (सीलिंग एण्ड रेगयुलेशन) एक्ट, 1976
- वन तथा वन्यजीव संबंधी कानून
- फोरेस्टस कंजरवेशन एक्ट, 1960
- वाइल्ड लाईफ प्रोटेक्शन एक्ट, 1972
- फोरेस्ट (कनजरवेशन) एक्ट, 1980
- वाइल्ड लाईफ (प्रोटेक्शन) एक्ट, 1995
- जैव-विविधता अधिनियम, 2002

कुछ महत्वपूर्ण कानून एवं उनका विश्लेषण

पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986

संयुक्त राष्ट्र का प्रथम मानव पर्यावरण सम्मेलन 5 जून, 1972 में स्टाकहोम में संपन्न हुआ। इसी से प्रभावित होकर भारत ने पर्यावरण के संरक्षण लिए पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 पास किया। यह एक विशाल अधिनियम है जो पर्यावरण के समस्त विषयों केा ध्यान में रखकर बनाया गया है। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य वातावरण में घातक रसायनों की अधिकता को नियंत्रित करना व पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदूषण मुक्त रखने का प्रयदून करना है। इस अधिनियम में 26 धाराएं है जिन्हें 4 अध्यायों में बाँटा गया है। यह कानून पूरे देश में 19 नवम्बर, 1986 से लागू किया गया। अधिनियम की पृष्ठभूमि व उद्दृश्यों के अंतर्गत शामिल बिन्दुओं के आधार पर सारांश में अधिनियम के निम्न उद्देश्यों हैं:

- पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार करना
- मानव पर्यावरण के स्टॉकहोम सम्मेलन के नियमों को कार्यान्वित करना
- मानव, प्राणियों, जीवों, पादपों को संकट से बचाना
- पर्यावरण संरक्षण हेतु सामान्य एवं व्यापक विधि निर्मित करना
- विद्यमान कानूनों के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण प्रधिकरणों का गठन करना तथा उनके क्रियाकलापों के बीच समन्वय करना

मानवीय पर्यावरण सुरक्षा एवं स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न करने वालों के लिए दण्ड की व्यवस्था करना। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986) एक व्यापक कानून है। इसके द्वारा केंद्र सरकार के पास ऐसी शक्तियां आ गई हैं जिनके द्वारा वह पर्यावरण की गुणवत्ता के संरक्षण व सुधार हेतु उचित कदम उठा सकती है। इसके अंतर्गत केंद्रीय सरकार को पर्यावरण गुणवत्ता मानक निर्धारित करने, औद्योगिक क्षेत्रों को प्रतिबंध करने, दुर्घटना से बचने के लिए सुरक्षात्मक उपाय निर्धारित करने तथा हानिकारक तत्वों का निपटान करने, प्रदूषण के मामलों की जांच एवं शोध कार्य करने, प्रभावित क्षेत्रों का तत्काल निरीक्षण करने, प्रयोगशालाओं का निर्माण तथा जानकारी एकत्रित करने के कार्य सौंपे गए हैं। इस कानून की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि पहली बार व्यक्तिगत रूप से नागरिकों को इस कानून का पालन न करने वाली फैक्ट्रियों के खिलाफ केस दर्ज करने का अधिकार प्रदान किया गया है।

वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम, 1972

कृषि, उद्योगों और शहरीकरण से वनों का काफी कटाव हुआ है। वनों के अधिक कटाव से अनेक वन्यजीव जंतुओं की कई प्रजातियाँ या तो लुप्त हो गई हैं या लुप्त होने के कगार पर हैं। वन्यजीवन के महत्त्व को ध्यान में रखकर व लुप्त होती प्रजातियों को बचाने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। सन 1952 में भारतीय वन्यजीवन बोर्ड का गठन किया गया। इस बोर्ड के अंतर्गत वन्य-जीवन पार्क और अभयारण्य बनाए गए। 1972 में भारतीय वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम पारित किया गया। भारत जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की समाप्त होने के खतरे में पडी प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी समझौते (1976) का सदस्य बना। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन (युनेस्को) का 'मानव और जैव मण्डल' कार्यक्रम भी भारत में चलाया गया और विलुप्त होती विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण के लिए परियोजनाएँ चलाई गईं। सिंह के संरक्षण के लिए 1972 में, बाघ के लिए 1973 में , मगरमक्वछ के लिए 1984 में तथा भूरे रंग के हिरण के लिए ऐसी परियोजनाएँ चलाई गईं।

वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम (1972) में लुप्त होती प्रजातियों के संरक्षण की व्यवस्था है तथा इन जातियों के व्यापार की मनाही है। इस अधिनियम के मुख्य प्रावधान निम्नलिखित हैं:

- संकट ग्रस्त वन्यप्राणियों की सूची बनाना तथा उनके शिकार पर प्रतिबंध लगाना
- संकटग्रस्त पौधों को संरक्षण प्रदान करना

- राष्ट्रीय चिडिय़ाघरों तथा अभयारण्यों में मूलभुत सुविधाओं को बनाए रखना तथा प्रबंध व्यवस्था को बेहतर बनाना
- लुप्त होती प्रजातियों को संरक्षण देना तथा उनके अवैध व्यापार को रोकना
- चिडियाघरों व अभयारण्यों में वंश वृद्धि कराना
- वन्यजीवन के लाभो की जानकारी का शिक्षा के माध्यम से प्रचार करना
- केंद्रीय चिडियाघर प्राधिकरण का गठन करना
- वन्यजीवन परामर्श बोर्ड का गठन, उसके कार्य तथा अधिकार सुनिश्चित करना।

वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम, (1972) को अधिक व्यावहारिक व प्रभावी बनाने के लिए इसमें वर्ष 1986 तथा 1991 में संशोधन किए गये। वन्यजीवन संरक्षण अधिनियम को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए वन्यजीवन संरक्षण निर्देशक तथा दिल्ली, मुंबई, कोलकाता व चेन्नई में चार उपनिर्देशकों की व्यवस्था की गई है।

वन संरक्षण अधिनियम, 1980

भारत सरकार ने वनों के संरक्षण तथा वनों के विकास के लिए वन संरक्षण अधिनियम (1980) पारित किया। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य वनों का विनाश और वन भूमि को गैर-वानिकी कार्यों में उपयोग से रोकना था। इस अधिनियम के प्रभावी होने के पश्चात कोई भी वन भूमि केंद्रीय सरकार की अनुमति के बिना गैर वन भूमि या किसी भी अन्य कार्य के लिए प्रयोग में नहीं लाई जा सकती तथा न ही अनारक्षित की जा सकती है। आबादी के बढने तथा मानव जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वनों का कटना स्वाभाविक है। अत: ऐसे कार्यों की योजनाएँ बनाते समय तथा वनों को काटने हेतु मार्गदर्शिकायें तैयार की गई हैं जिससे वनों को कम से कम नुकसान हो। इन मार्गदर्शिकाओं में निम्न बिन्दुओं पर अधिक ध्यान दिया गया है:

- वन सबंधी योजनाएँ इस प्रकार हो ताकि वन संरक्षण को बढावा मिले
- वनों की कटाई जहाँ तक संभव हो रोका जाना चाहिए
- पशुओं के लिए चारागाहों को ध्यान रखना चाहिए व चारे के उत्पादन हेतु विशेष प्रावधान किया जानेचाहिए
- कुछ समय के लिए वनों की कटाई पर पूर्ण प्रतिबंध लगा देना चाहिए ताकि इन हलाकों में पुन:पेड-पौधे उग सकें। पहाडों, जल क्षेत्रों, ढलान वाली भूमियों पर वनों को पूरी तरह से संरक्षित कियाजाना चाहिए।

देश की स्वतंत्र ता के पश्चात राष्ट्रीय वन नीति (1952) घाषित की गई लेकिन वनों के विकास पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। 1970 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के प्रति चेतना की जागृति का विकास होने से वन संरक्षण को भी बल मिला। वन संरक्षण अधिनियम (1980) का इस दिशा में विशेष योगदान रहा। सन् 1951 से 1980 के बीच वन भूमियों का अपरदन 1.5 लाख हैक्टेयर प्रति वर्ष था जबकि इस अधिनियम के लागू होने के पश्चात भूमि का अपरदन 55 हजार हैक्टेयर रह गया है। इस अधिनियम को अधिक प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करने के लिए इसमें वर्ष 1988 में संशोधन किया गया।5

सकता है। पुलिस अधिनियम, 1861 के अंतर्गत पुलिस अधिक्षक को अधिकृत किया गया है कि वह त्योहारों और उत्सवों पर गालियों में संगीत नियंत्रित कर सकता है।

जैव-विविधता संरक्षण अधिनियम, 2002

भारत विश्व में जैव-विविधता के स्तर पर 12वें स्थान पर आता है। अकेले भारत में लगभग 45000 पेड-पौधों व 81000 जानवरों की प्रजातियां पाई जाती है जो विश्व की लगभग 7.1 प्रतिशत वनस्पतियों तथा 6.5 प्रतिशत जानवरों की प्रजातियों में से है। जैव-विविधता संरक्षण हेतु केंद्र सरकार ने 2000 में एक राष्ट्रीय जैव-विविधता संरक्षण क्रियानवयन योजना शुरु की जिसमें गैर सरकारी संगठनों, वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों तथा आम जनता को भी शामिल किया गया। इसी प्रक्रिया में सरकार ने जैव विविधता संरक्षण कानून 2002 पास किया जो इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वर्ष 2002 में पारित इस कानून का उद्देश्य है-जैविक विविधता की रक्षा की व्यवस्था की जाए उसके विभिन्न अंशों का टिकाऊ उपयोग किया जाए, तथा जीव-विज्ञान संसाधन ज्ञान के उपयोग का लाभ सभी में बराबर विभाजित किया जाये। अधिनियम में, राष्ट्रीय स्तर पर जैव-विविधता प्राधिकरण बनाने का भी प्रावधान है, राज्य स्तरों पर राज्य जैव विविधता बोर्ड स्थापित करने, तथा स्थानीय स्तरों पर जैव-

भारत का भूगोल

अध्याय – I

स्थिति-विस्तार एवं

भौतिक विशेषताएं

भारत की स्थिति व सीमाओं से सम्बंधित महत्वपूर्ण बिंदु –

- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में हिन्द महासागर के शीर्ष पर तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6'उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 9702S' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का सातवा स्थान है। यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5,संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा प में पाकिस्तान एवं अरब सागर है। भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरू मध्य(Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत का दक्षिणतम बिन्दु-कन्याकुमारी है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (गेटनिकोबार में है)।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल है।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु
• दक्षिणतम बिन्दु- इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप) • उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (जम्मू-कश्मीर) • पश्चिमी बिन्दु- सर क्रीक (गुजरात) • पूर्वी बिन्दु-वालांगू (अरुणाचल प्रदेश) • मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा-कन्याकुमारी (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य	
पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर
अफगानिस्तान (1)	जम्मू और कश्मीर
चीन (5)	जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम,अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, प बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, प बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	प बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचलप्रदेश,नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार	
भारत-बांग्लादेश सीमा	4098 किमी.
भारत-चीन	3239किमी.
भारत-पाक सीमा	3310 किमी.
भारत-नेपाल सीमा	1761 किमी.
भारत- म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत-भूटान सीमा	587 किमी.

भौतिक विशेषताएं

- कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत के बीचो - बीच से गुजरती है।
- भारत को पाँच प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ।
  - उत्तर का पर्वतीय प्रदेश
  - उत्तर का विशाल मैदान
  - दक्षिण का प्रायद्वीपीय पठार
  - समुद्र तटीय मैदान
  - थार का मरुस्थल
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30 पूर्वी देशान्तर है। (वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा 7516.6 किमी. लम्बी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है।

शीर्ष पाँच क्षेत्रफल वाले राज्य	
राज्य	**क्षेत्रफल वर्ग किमी.**
राजस्थान	3422239
मध्यप्रदेश	308245
महाराष्ट्र	307713
आन्ध्र प्रदेश	275069
उत्तर प्रदेश	240928

शीर्ष पाँच भौगोलिक क्षेत्र वाले जिले	
जिला	**क्षेत्रफल वर्ग किमी.**
कच्छ	45652
लेह	45110
जैसलमेर	38428
बाड़मेर	28387
बीकानेर	27284

- जनसंख्या की दृष्टि से सिक्किम भारत का सबसे छोटा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह सबसे बड़ा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- मध्य प्रदेश भारत का सबसे बड़ा पठारी राज्य है।
- राजस्थान भारत का सबसे बड़ा मरुस्थलीय राज्य है।
- मध्य प्रदेश में वन (जंगल) सबसे अधिक है।
- भारत में द्वीपों की कुल संख्या 248 है बंगाल की खाड़ी में 223 तथा अरब सागर में 25 द्वीप है।
- भारत के सबसे दक्षिणी छोर का नाम इन्दिरा प्वाइंट' है और यह बंगाल की खाड़ी में ग्रेट निकोबार (Great Nicobar) द्वीप पर स्थित है। भारत का सबसे उत्तरी बिन्दु इन्दिरा कॉल जम्मू-कश्मीर में स्थित है।
- पूर्वी घाट को कोरोमंडल तट के नाम से जाना जाता है।
- पश्चिमी घाट को मालाबार तट के नाम से जाना जाता है।
- भारत के जिन राज्यों में से होकर कर्क रेखा गुजरती है वे हैं- गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल, त्रिपुरा और मिजोरम ।
- भारतीय मानक समय की देशांतर रेखा (82°30) उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं आन्ध्रप्रदेश से गुजरती है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (4) को छूती है- उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।

- भारत में सर्वाधिक नगरों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जबकि मेघालय में सबसे कम नगर हैं।
- भारत में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाला राज्य महाराष्ट्र है जबकि सबसे कम नगरीय जनसंख्या सिक्किम में है।
- भारत में कार्यशील व्यक्तियों की जनसंख्या 4.02 करोड़ है।
- भारत में सड़क मार्ग की कुल लम्बाई 18,43,420 किमी. हैं।
- भारत का सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 है जो बनारस से कन्याकुमारी तक जाता है (2369 किमी.)।
- भारत में रेलमार्ग की कुल लम्बाई 64,140 किमी. है।
- तिरुअनन्तपुरम एवं कोचीन (केरल) नगरों में मानसून की सर्वप्रथम वर्षा होती है।

प्रमुख चैनल / जलडमरूमध्य	
विभाजित स्थल खण्ड	**चैनल/खाड़ी/स्ट्रेट**
इन्दिरा प्वाइंट-इण्डोनेशिया	ग्रेट चैनल
लघु अंडमान-निकोबार	10°चैनल
मिनीकॉय-लक्षद्वीप	9° चैनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चैनल
भारत-श्रीलंका	मन्नार की खाड़ी
पाक की खाड़ी	पाक स्ट्रेट

• पर्वत

I. उत्तर भारत का विशाल पर्वतीय क्षेत्र

यह विश्व की सर्वोच्च पर्वतीय स्थलिकृति है ,जिसका विस्तार भारत के प से लेकर पूर्व तक है। इस पर्वतीय श्रेणी को तीन भागों में बाँटा जा सकता है /

1. ट्रांस हिमालय श्रेणी
2. हिमालय पर्वत श्रेणी
3. पूर्वांचल की पहाड़ियों

ट्रांस हिमालय :- ट्रांस हिमालय का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था इसके अन्तर्गत काराकोरम लद्दाख कैलाश व जास्कर आती है इन श्रेणीयों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी - यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।

- भारत की सबसे ऊंची चोटी k2 या गाड़विन ऑस्टिन (8611 m) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित है
- काराकोरम दर्रा काराकोरम श्रृंखला स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा है।
- भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा सियाचिन यहीं अवस्थित है
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख हिमनद (ग्लेशियर) स्थित हैं।

- सियाचिन (72 km)
- बाल्टोरा (58km)
- बैफो (60 km)
- हिस्पर (61 Km)

(B) **लद्दाख श्रेणी** - विश्व की सबसे बड़ी ढाल वाली चोटी राकापोशी लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है ।

- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है। यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- यह भारत का न्यूतम वर्षा वाला क्षेत्र है ।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है ।

(C) जास्कर श्रेणी- यह ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी है ।

- नंगापर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणियों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है।

1. **वृहद या हिमाद्रि या महान हिमालय**- इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरुआ पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल

3. पर्वतीय वन के वृक्षों का समुच्चय है

(A) चीड़, देवदार, लार्च

(B) आम , बांस , बबूल

(C) बबूल, पीपल, चीड़

(D) नारियल, शीशम, देवदार

उत्तर (A)

4.भारत में वनों की ताजा स्थिति के संबंध में रिपोर्ट कौन जारी करता है ?

(A) वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

(B) भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग, देहरादून

(C) राष्ट्रीय पर्यावरण शोध संस्थान, नागपुर

(D) केन्द्रीय शुष्क भूमि अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

उत्तर (B)

5. भारत में निम्नलिखित राज्यों को उनके वनों के क्षेत्रफल के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए (17वीं वन रिपोर्ट के अनुसार) तथा नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए –

1. मध्य प्रदेश 2. अरुणाचल प्रदेश 3. छत्तीसगढ़ 4. ओडिशा

(A) 1,3,4,2 (B) 1,2,3,4

(C) 4,3,1,2 (D) 2,3,4,1

उत्तर (B)

6. भारत में 'वन महोत्सव' के जन्मदाता कौन हैं ?

(A) महात्मा गांधी (B) विनोबा भावे

(C) के. एम. मुंशी (D) जवाहर लाल नेहरु

उत्तर (C)

7. राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार पर्यावरण की दृष्टि से देश के कम-से-कम कितने प्रतिशत क्षेत्र पर वनों का आवरण आवश्यक है ?

(A) 23% (B) 25%

(C) 33% (D) 40%

उत्तर (C)

अध्याय – 5

ऊर्जा संसाधन

ऊर्जा के स्त्रोत (source of Energy)

ऊर्जा उत्पादन के अनेक स्त्रोत हैं, जिन्हें ऊर्जा के परंपरागत एवं गैर परंपरागत स्त्रोतों में वर्गीकृत किया जाता है/

- **ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोत**

परंपरागत ऊर्जा स्त्रोत से तात्पर्य वैसे स्त्रोतों से है जो लंबे समय से उपयोग में लाए जा रहे हैं / जैविक अवशेष व जीवाश्म ईंधन परंपरागत ऊर्जा के दो प्रमुख स्त्रोत हैं / इसके अंतगर्त सम्मिलित ऊर्जा हैं/

1.खनिज तेल एवं प्राकृतिक गैस

2.जैविक अवशेष

3.कोयला

4.जल विद्युत

ऊर्जा के गैर परंपरागत स्त्रोत

1.पवन ऊर्जा

2.सौर ऊर्जा

3.परमाणु ऊर्जा

4.ज्वारीय ऊर्जा

5.बायो गैस ऊर्जा

6.भू – तापीय ऊर्जा

ऊर्जा संसाधन (Energy Resources)

- भारत में परम्परागत एवं गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का विवरण ।
- कोयलें का वितरण, उपयोग एवं संरक्षण ।
- खनिज तेल का वितरण, महत्त्व एवं संरक्षण ।
- जल विद्युत उत्पादन की आवश्यक दशाएँ, उत्पादन क्षेत्र, उपयोग एवं महत्त्व ।
- आणविक ऊर्जा का उत्पादन, आणविक खनिज, उनका उत्पादन एवं सरंक्षण ।

कोयला (Coal)

कोयला काला रंग, भूरे रंग, का कार्बन युक्त ठोस जीवाश्म ईंधन है, जो मुख्यतः अवसादी शैलों में पाया जाता है । यह ज्वलनशील होता है । यह घरेलू

ईंधन से लेकर औद्योगिक ईंधन तक में उपयोग में लाया जाता है।

कोयले की उत्पत्ति (Origin of coal)

कोयला एक खनिज पदार्थ है। जिसमें कार्बन की मात्रा अधिक पायी जाती है। कार्बन के अतिरिक्त ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन तथा अन्य कुछ अपद्रव्य पदार्थ कोयलें में पाए जाते हैं। यह एक जीवाश्म वनस्पति है। प्रायः कोयले की उत्पत्ति के मुख्यतः दो युग माने जाते हैं। (1) कार्बोनीफेरस युग और (2) टर्शियरी युग।

कोयले की किस्में (Kinds of Coal)

कोयले में कार्बन तत्त्व की मात्रा के अनुसार ऊर्जा क्षमता होती है। इसके आधार पर निम्न किस्में पायी जाती हैं –

(1) एंथ्रेसाइट (Anthracite) – यह कोयला सर्वोत्तम प्रकार का होता है। यह कठोर, चमकदार, खेदार तथा भंगुर होता है। इसमें कार्बन की मात्रा 90 प्रतिशत से 96 प्रतिशत होती हैं। इसमें वाष्पशील पदार्थ बहुत कम होता है। यह जलने में धुआँ कम देता है तथा ताप बहुत अधिक होता है।

(2) बिटुमिनस (Bituminus)– यह काले रंग का चमकदार कोयला होता है। इसमें कार्बन की मात्रा 70 प्रतिशत से 90 प्रतिशत होती है। इसमें वाष्पशील पदार्थ की मात्रा अधिक होती है। यह जलने पर बहुत धुआँ देता है। यह पीली लो के साथ जलता है।

(3) लिग्नाइट (Lignite) – यह भूरे रंग का कोयला है, इसमें कार्बन की मात्रा 45-70 प्रतिशत होती है। यह जलने में धुआँ अधिक देता है तथा राख भी बहुत छोड़ता है। इसमें वनस्पति का अंश अधिक मात्रा में होता है।

(4) पीट कोयला (Peat Coal) – यह वनस्पति के मौलिक रूप में थोड़ा-सा ही परिवर्तित कोयला है। इसमें कार्बन की मात्रा 40 प्रतिशत पायी जाती है। यह प्रायः लकड़ी की तरह जलता है और जलने में बहुत धुआँ देता है।

कोयलें के सुरक्षित भण्डार (Reserves of Coal)

विश्व में भारत का कोयला उत्पादन एवं भण्डारण में महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग के अनुसार 2004 तक देश में धरातल से 1200 मीटर की गहराई तक सुरक्षित कोयले का भण्डार 2,45,693 मिलियन टन है।

भारत में कोयलें वितरण एवं उत्पादन (Distribution and Production of Coal in India)

भारत में कोयलें का उत्पादन गोण्डवाना प्रदेश में 98 प्रतिशत तथा टर्शियरी युग में 2 प्रतिशत किया जाता है। जिसमें से 86 प्रतिशत कोयले के भण्डार झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश राज्यों में अवस्थित हैं।

गोण्डवाना कोयला क्षेत्र

1. महानदी घाटी कोयला क्षेत्र – यह क्षेत्र मुख्य रूप से उड़ीसा के धनकमल, संबलपुर, सुन्दरगढ़ जिलों में पाया जाता है। यह क्षेत्र भारत के कुल कोयला भण्डार का 2 प्रतिशत तथा उत्पादन का 6 प्रतिशत भाग उत्पादित करता है।

2. गोदावरी नदी घाटी कोयला क्षेत्र – इसका विस्तार गोदावरी नदी घाटी में आंध्र प्रदेश के आदिलाबाद, पश्चिमी गोदावरी, करीम नगर, खम्माम तथा वारंगल जिलों में है। यहाँ भारत के कुल उत्पादक का 7.5 प्रतिशत कोयला प्राप्त होता है।

3. दामोदर नदी घाटी कोयला क्षेत्र – यह भारत का प्रमुख कोयला उत्पादक तथा सर्वाधिक भण्डार रखने वाला क्षेत्र है। जिस पर सम्पूर्ण भारत की औद्योगिक क्रियाएँ निर्भर हैं। इस क्षेत्र को निम्न उपभागों में विभाजित किया जाता है।

(1) मुख्य दामोदर नदी घाटी कोयला क्षेत्र – झारखण्ड में मुख्य कोयला उत्पादक क्षेत्र रानीगंज से 48 कि.मी. पश्चिम में स्थित झरिया है, जो 436 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है। इस क्षेत्र में देश का 90 प्रतिशत कुकिंग कोयले का भण्डार है। कुल भण्डार लगभग 1860 करोड़ टन है।

(2) उत्तरी दामोदर नदी घाटी कोयला क्षेत्र – इसका विस्तार मुख्य दामोदर नदी घाटी के उत्तरी भाग में स्थित राजमहल पहाड़ियों (झारखण्ड) में हैं। जहाँ सहजोरी जैन्ती तथा कन्दित छोटे उत्पादक क्षेत्र हैं। यह क्षेत्र झारखण्ड राज्य के पूर्वी भाग तथा पश्चिम बंगाल में विस्तृत है।

(3) पश्चिमी एवं उत्तर-पश्चिमी दामोदर नदी घाटी कोयला क्षेत्र- मुख्य दामोदर नदी घाटी के उत्तर-पश्चिम एवं पश्चिम भाग में विस्तृत इस क्षेत्र

का विस्तार झारखण्ड राज्य के पलामू जिले के ओरंगा, डाल्टनगंज, हुनार क्षेत्रों में पाया जाता है। डाल्टनगंज मुख्य क्षेत्र है, जो 80 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है।

(4) छत्तीसगढ़ कोयला क्षेत्र - इस राज्य के उत्तरी भाग में मुख्य कोयला उत्पादक क्षेत्र स्थित है। जिसमें रामकोला तातापानी कोयला उत्पादक क्षेत्र महत्त्वपूर्ण हैं। यह लगभग 2000 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है लेकिन यहाँ अधिकतर कोयला निम्न श्रेणी का है।

(5) सोन नदी घाटी कोयला क्षेत्र- इस क्षेत्र का विस्तार मध्यप्रदेश राज्य में है। जहाँ शहडोल तथा सीधी जिलों में सिंगरौली मुख्य कोयला उत्पादक क्षेत्र हैं। यहाँ 3 से 5 मीटर मोटी कोयले की परत के रूप में लगभग 830 करोड़ टन के भण्डार हैं। जो लगभग 300 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है। शहडोल जिलें का दूसरा मुख्य कोयला उत्पादक क्षेत्र सोहागपुर है। उमरिया इस प्रदेश का तीसरा मुख्य कोयला उत्पादक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में उत्पादित कोयले में राख तथा जलवाष्प की अधिकता के कारण इसका अधिकतर उपयोग कोयले की वाष्प तथा गैस बनाने में किया जाता है।

(6) वर्धा घाटी कोयला क्षेत्र - इसका विस्तार महाराष्ट्र में है, जहाँ भारत के कुल कोयला भण्डार का 3 प्रतिशत कोयला है। मुख्य उत्पादक क्षेत्र चन्द्रपुर जिले के घुघुस, बसेरा, में स्थित है, जहाँ 50 करोड़ टन कोयले के भण्डार है। इसके अतिरिक्त यवतमाल जिले का बल्लारपुर क्षेत्र, नागपुर का काम्पटी क्षेत्र अन्य मुख्य कोयला उत्पादक क्षेत्र हैं।

लिग्नाइट कोयला क्षेत्र - गोण्डवाना तथा टर्शियरी कालीन कोयला की अपेक्षा यह एक घटिया श्रेणी का कोयला है। जिसके उत्पादक निम्न राज्य हैं-

तमिलनाडु- भारत में लिग्नाइट कोयले के उत्पादन में तमिलनाडु का नेवेली महत्त्वपूर्ण कोयला उत्पादक क्षेत्र है। नेवेली क्षेत्र का विस्तार तमिलनाडु के वेल्लोर व तिरुवल्लुर जिलों में लगभग 256 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में हैं। यह क्षेत्र चेन्नई से 216 कि.मी. दूर है। इस क्षेत्र में 52 मीटर की गहराई पर 20 मीटर मोटी परतों के रूप में लिग्नाइट कोयला पाया जाता है।

राजस्थान - इस राज्य में लिग्नाइट कोयले के भण्डार मुख्य रूप से बीकानेर, जोधपुर, नागौर, जैसलमेर तथा बाड़मेर जिलों में पाये जाते हैं। बीकानेर के पलाना, खारी, चान्नेरी, गंगा सरोवर, मढ़ मुख्य कोयला उत्पादक क्षेत्र हैं। जिसमें पलाना मे सर्वाधिक कोयला उत्पादित किया जाता है।

कोयले का उपयोग (Utilisation of Coal)

कोयले का उपयोग निम्न क्षेत्रों में किया जाता है:

- घरेलू ईंधन के रूप में,।
- कारखानों में मशीनों के संचालन में,।
- उद्योग, परिवहन, कृषि आदि में ऊर्जा के रूप में प्रयोग।
- कच्चे माल के रूप में।
- कोल गैस बनाने में।
- कोक, तारकोल, फिनायल आदि के निर्माण में,।
- सुगंधित तेलों तथा प्रसाधन सामग्रीयों के निर्माण में आदि।

कोयले की समस्याएँ एवं संरक्षण (Problems and Conservation of Coal)

भारत में कोयलें के उत्पादन की अनेक समस्याएँ हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार से हैं

(1) उत्तम श्रेणी के कोयले का अभाव

(2) कोयला भण्डारों का असमान वितरण,

खनिज तेल (Mineral Oil)

खनिज तेल की उत्पत्ति (Origin Mineral Oil)

खनिज तेल वर्तमान युग का सबसे महत्त्वपूर्ण परम्परागत ऊर्जा का स्रोत है। यह प्रकृति द्वारा निर्मित हाइड्रो-कार्बन तत्त्व है। जिसका निर्माण वानस्पतिक तत्त्वों तथा जीवों के अवशेषों के रूपान्तरण से हुआ है। यह एक जीवाश्म ईंधन है जिसको पेट्रोलियम भी कहते हैं। इसकी उत्पत्ति वनस्पतियों तथा जीव जन्तुओं के सड़ने व गलने से होती है। सामान्यतया: उथले समुद्रों, झीलों, दलदलों व नदियों के डेल्टाओं आदि में मृत जीव-जन्तु तथा वनस्पतियों तली पर एकत्रित होते रहते हैं और उनके ऊपर अवसाद जमा होते रहते हैं। भूगर्भ मे करोड़ों वर्षों तक शैलों मे दबे रहने के कारण ताप, दाब तथा रेडियोधर्मिता से पेट्रोलियम, कार्बन, गंधक आदि तत्वों का उद्भव होता है। यह अवसादी शैलों में जल की भांति संचित रहता है। मुख्यत: टर्शियरी युग की अवसादी शैलों में खनिज तेल पाया जाता है।

भूगर्भ से प्राप्त खनिज तेल अशुद्ध रूप में मिलता है। इसे शोधन शालाओं में शोधित किया जाता है

। शोधित तेल को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है ।

1. पेट्रोल

2. डीजल

3. केरोसीन

भारत में खनिज तेल का वितरण एवं उत्पादन

(Distribution and production of Mineral Oil in India)

भारत में खनिज तेल का वितरण स्थलीय, सागरीय तटीय एवं अन्तः सागरीय भागों में पाया जाता है । भारत में पेट्रोलियम निकालने का प्रारम्भ सर्वप्रथम 1860 में असम में डिग्बोई क्षेत्र में किया गया । आर्थिक - तकनीकी व आवागमन के साधनों के कारण इस क्षेत्र में 1890 से खनिज तेल का विधिवत आरम्भ हुआ । प्रारम्भ में तेल उत्पादन का कार्य असम तेल कम्पनी द्वारा किया ।

भारत के तेल उत्पादक क्षेत्र का वर्णन निम्न प्रकार से है।

असम- इस राज्य में निम्न क्षेत्रों में तेल उत्पादक कार्य किया जा रहा है ।

(अ) डिग्बोई क्षेत्र - यह क्षेत्र असम राज्य के लखीमपुर जिले की नागा पहाड़ियों में स्थित टीपम पहाड़ियों के पूर्वी भाग में स्थित है । जहाँ भारत में सर्वप्रथम खनिज तेल का उत्पादन प्रारम्भ हुआ । यहाँ लगभग 13 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में तेल उत्पादन हो रहा है ।

(ब) नाहरकटिया क्षेत्र - यह तेल क्षेत्र डिग्बोई से लगभग 40 कि.मी. दूर दीहांग नदी तट के समीप स्थित है, जहाँ 1953 से खनिज तेल उत्पादन हो रहा है । यहाँ पर तेल के साथ - साथ प्राकृतिक गैस का उत्पादन भी किया जा रहा है । यहाँ पर लगभग 60 कुएँ हैं जिनमें 4,000 से 5,000 मीटर की गहराई से तेल निकाला जाता है । बरौनी तथा नूनमती तेल शोधन शालाओं में तेल को साफ किया जाता है । इस क्षेत्र में ऑयल इण्डिया लिमिटेड कंपनी द्वारा तेल उत्पादन किया जाता है।

(स) सूरमा घाटी- इस प्रदेश के मुख्य तेल उत्पादक क्षेत्र बदरपुर, मसीमपुर, पथरिया हैं, जहाँ लगभग 60 कुओं से तेल उत्पादन हो रहा है । इस क्षेत्र में प्राप्त तेल मध्यम श्रेणी का है जो अधिक गहराई से निकाला जाता है ।

(द) सुद्र सागर-लखवा क्षेत्र - यह क्षेत्र शिवसागर जिलें में स्थित है । जहाँ लगभग 50 करोड़ टन तेल के भण्डार है । तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा खोज एवं उत्पादन कार्य किया जा रहा है । **(य) हगरीजन-मोरेन क्षेत्र** - यह प्रदेश नाहरकटिया के दक्षिण - पश्चिम से 40 कि.मी. दूर स्थित है । इस क्षेत्र में तेल के 22 कुएँ हैं, जहाँ उत्पादन किया जा रहा है ।

2. गुजरात - इस राज्य में तेल उत्पादक पेटी सूरत से राजकोट तक 15360 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में विस्तृत है । नवीन खोजों के अनुसार इस राज्य के कच्छ क्षेत्र में भी तेल के नवीन भण्डारों की सम्भावना है । इस राज्य में निम्न मुख्य तेल उत्पादक क्षेत्र हैं

(अ) अंकलेश्वर क्षेत्र - यह क्षेत्र गुजरात के भड़ौंच जिलें में बड़ोदरा से 45 कि.मी. दक्षिण में नर्मदा नदी के तट पर स्थित है । यहाँ उत्पादित तेल में मिट्टी के तेल तथा गैसोलीन की मात्रा पायी जाती है । इस क्षेत्र में 1100 से 1200 मीटर गहराई से प्रतिवर्ष लगभग 30 लाख टन तेल का उत्पादन किया जाता है ।

(ब) कलोल क्षेत्र - यह क्षेत्र अहमदाबाद के पश्चिम में नवागाँव कोसम्बा, मेहसाना, कोथाना रकसोल सानन्द, बचराजी, काड़ी, वासना आदि छोटे तेल उत्पादक क्षेत्रों में विस्तृत है ।

(स) लूनेज क्षेत्र - यह क्षेत्र गुजरात में अरब सागर के तटीय क्षेत्र में खम्भात की खाड़ी के ऊपरी उत्तरी भाग में स्थित है । जहाँ से 15 लाख टन वार्षिक तेल उत्पादन हो रहा है ।

(द) अन्य क्षेत्र - इसके अतिरिक्त गुजरात के बड़ौदा, भडौंच सूरत, खेड़ा, अहमदाबाद, आदि जिलों में छोटे क्षेत्रों में भी तेल उत्पादन किया जा रहा है ।

3. भारत के मैंदानी भाग गुजरात तथा असम में तेल उत्पादक क्षेत्र स्थित है । इसके अतिरिक्त तेल उत्पादक क्षेत्र समुद्र के तटीय क्षेत्र में भी स्थित है जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है

(अ) मुम्बई हाई - यह भारत में सर्वाधिक तेल उत्पादक क्षेत्र है । महाराष्ट्र राज्य के अरब सागर के तटीय क्षेत्र में महाद्वीपीय मग्न तट पर मुम्बई से लगभग 176 कि.मी., उत्तर - पश्चिम मुम्बई हाई तेल उत्पादक क्षेत्र स्थित है । इस क्षेत्र में तेल प्राप्ति सागर सम्राट नामक जलयान द्वारा 1976 में हुई,

परिणामस्वरूप वर्ष 2016 में श्री रतन पी. वाटल, प्रमुख सलाहकार, NITI आयोग की अध्यक्षता में डिजिटल भुगतान पर समिति की स्थापना की गई।

रुपे कार्ड (Rupay Card)

- रुपे कार्ड भारतीय डेबिट और क्रेडिट कार्ड पेमेंट नेटवर्क है।
- रुपे कार्ड से देश के सभी पीओएस डिवाइसेज और ई-कॉमर्स वेबसाइट पर भुगतान किया जा सकता है और एटीएम से कैश निकाला जा सकता है।
- यह भारत का स्वदेशी पेमेंट सिस्टम है। रुपे कार्ड को भारतीय राष्ट्रीय भुगतान नियम (NPCI) ने विकसित किया है। इसे भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकिंग उद्योग के लिए प्रवर्तित किया है।
- मौजूदा समय में रुपे ग्लोबल कार्ड्स पाँच वेरिएंट्स में जारी किए जाते हैं रुपे क्लासिकल कार्ड, रुपे क्लासिक क्रेडिट कार्ड, रुपे प्लेटिनम डेबिट कार्ड, रुपे प्लेटिनम क्रेडिट कार्ड और रुपे सेलेक्ट क्रेडिट कार्ड।
- इस कार्ड का उपयोग सिंगापुर, भूटान, संयुक्त अरब अमीरात (UAE), बहरीन और सऊदी अरब में लेन-देन के लिये भी किया जा सकता है।

UPI (Unified Payment Interface) & BHIM (Bharat Interface for Money)

Mobile App के माध्यम से विभिन्न बैंकों के खातों में निधि अन्तरण की सुविधा को सरल बनाने के उद्देश्य से NPCI ने यह प्लेटफार्म बनाया इस साझा प्लेट फार्म से जुड़े बैंकों को के जमाकर्ता किसी भी अन्य खाते में तत्काल निधि अन्तरण कर सकते हैं निधि अन्तरण करने वाले व्यक्ति एवम् लाभार्थी दोनों के पास अपनी विशिष्ट UPI पहचान होनी चाहिए जो की उस व्यक्ति का बैंक खाता, फोन नं., ई-मेल ID इत्यादि कुछ भी हो सकते हैं। इसी सुविधा को प्रदान करने के उद्देश्य से जो Mobile app, NPCI ने तैयार किया हैं उसका राम BHIM रखा गया हैं।

White label ATM & Brown label ATM

यदि एक ATM स्थापित करें तब इसे Brown Label ATM कहा जाता। इससे भिन्न यदि एक गैर बैंकिंक वित्तिय company एक ATM स्थापित करें तब यह white Label ATM कहलाता है दोनों में से किसी भी प्रकार के ATM का प्रयोग किसी भी बैंक के खाताधारक कर सकते हैं।

अध्याय – 5

केंद्र सरकार की योजनाएँ

एक राष्ट्र – एक राशन कार्ड योजना

- केन्द्रीय उपभोक्ता मामले खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने 30 जून, 2020 तक पूरे देश में एक राष्ट्र – एक राशन कार्ड योजना लागू करने की घोषणा की है।
- खाद्य सुरक्षा की समस्या से निपटने के लिये भारत सरकार ने 'वन नेशन-वन राशन कार्ड' (One Nation One Ration Card- ONORC) योजना की शुरुआत की है। ONORC योजना किसी लाभार्थी को उसका राशन कार्ड कहीं भी पंजीकृत होने से स्वतंत्र रखते हुए देश में कहीं भी अपने कोटे का खाद्यान्न प्राप्त कर सकने की अनुमति देती है।

किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (kusum)

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमण्डलीय समिति (Cabinet Committee on Economic Affairs-CCEA) ने किसानों को वित्तीय और जल सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से **किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान-कुसुम** (Kisan Urja Suraksha evam Utthaan Mahabhiyan-KUSUM) को शुरू करने की मंज़ूरी दे दी है।

लक्ष्य

- तीनों घटकों को शामिल करने वाली इस योजना का लक्ष्य वर्ष 2022 तक कुल 25,750 मेगावाट की सौर क्षमता स्थापित करना है।

योजना के लाभ

- इस योजना से ग्रामीण भू-स्वामियों को स्थायी व निरंतर आय का स्रोत प्राप्त होगा।
- किसान उत्पादित ऊर्जा का उपयोग सिंचाई ज़रूरतों के लिये कर पाएंगे तथा अतिरिक्त ऊर्जा बिजली वितरण कंपनियों को बेच पाएंगे। इससे किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी।
- इस योजना से कार्बन डाइऑक्साइड में कमी आएगी और वायुमंडल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। योजना के तीनों घटकों को सम्मिलित करने से पूरे वर्ष में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में 27 मिलियन टन की कमी आएगी।

- घटक बी के अंतर्गत सौर कृषि पंपों से प्रतिवर्ष 1.2 बिलियन लीटर डीज़ल की बचत होगी। इससे कच्चे तेल के आयात में खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी।
- इस योजना में रोज़गार के प्रत्यक्ष अवसरों को सृजित करने की क्षमता है। स्व-रोज़गार में वृद्धि के साथ इस योजना से कुशल व अकुशल श्रमिकों के लिये 6.31 लाख रोज़गार के नए अवसरों के सृजित होने की संभावना है।

जल जीवन मिशन

- जल जीवन मिशन की घोषणा अगस्त 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी, इस मिशन का प्रमुख उद्देश्य वर्ष 2024 तक सभी ग्रामीण घरों में पाइप जलापूर्ति (हर घर जल) सुनिश्चित करना है।
- जल जीवन मिशन की प्राथमिकता देश भर के सभी भागों में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना है।
- इस मिशन के तहत कृषि में पुनः उपयोग के लिये वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण और घरेलू अपशिष्ट जल के प्रबंधन हेतु स्थानीय बुनियादी ढाँचे के निर्माण पर भी ध्यान दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना

- प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना एक केन्द्रीय क्षेत्रक योजना है
- इसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 24 फरवरी, 2019 को लघु एवं सीमान्त किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश e की गई है/
- _इस योजना के तहत पात्र किसान परिवारों को प्रतिवर्ष 6000 के दर से प्रत्यक्ष आय सहायता उपलब्ध कराई जाती है / यह आय सहायता 2,000 रुपए की तीन सामान किस्तों में लाभान्वित किसानों की बैंक खातों में प्रत्यक्ष रूप से हस्तांतरित की जाती है/

व्यापारियों और स्वरोजगार योजना

- प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रांची में व्यापारियों और स्वरोजगार वाले व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना शुरू की है।
- यह पेंशन योजना उन व्यापारियों (दुकानदारों / खुदरा व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों) के लिए है जिनका वार्षिक कारोबार 1.5 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है।
- इस राष्ट्रव्यापी शुरुआत से इस योजना के तहत भावी लाभार्थियों के लिए नामांकन की सुविधा देश भर में स्थित 3.50 लाख कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) के माध्यम से उपलब्ध कराई गई है।
- सरकार ने व्यापरियों (दुकानदारों/ खुदरा व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों) के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना को मंजूरी दी है।
- यह 18 से 40 वर्ष की आयु के व्यापारियों के लिए एक स्वैच्छिक और अंशदायी पेंशन योजना है। इसमें लाभार्थी की आयु 60 वर्ष होने पर न्यूनतम 3,000 रुपये मासिक पेंशन देने का प्रावधान है।
- लाभार्थी को आयकर दाता नहीं होना चाहिए तथा उसे ईपीएफओ/ ईएसआईसी/ एनपीएस (सरकार)/ पीएम-एसवाईएम का सदस्य भी नहीं होना चाहिए।
- इस योजना के तहत केंद्र सरकार का मासिक अंशदान में 50% योगदान होगा और शेष 50% अंशदान लाभार्थी द्वारा किया जाएगा।
- मासिक योगदान को कम रखा गया है। उदाहरण के लिए, एक लाभार्थी को 29 वर्ष की आयु होने पर केवल 100 रुपये प्रति माह का छोटा सा योगदान करना आवश्यक है।
- यह पेंशन योजना प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की दूसरे कार्यकाल की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है।
- वर्ष 2019-20 तक 25 लाख लाभार्थियों तथा 2023-2024 तक 2 करोड़ लाभार्थियों को इस योजना में शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। इस योजना से देश के लगभग 3 करोड़ व्यापारियों के लाभान्वित होने की उम्मीद है।

प्रधान मंत्री श्रम योगी मानधन योजना

- श्रम और रोजगार मंत्रलाय ने प्रधानमंत्री श्रम योगी मान – धन योजना लाँच किया है /
- इसका शुभारम्भ 12 सितम्बर ,2019 को राँची(झारखंड) में किया गया
- इस योजना के पात्र 18 – 40 वर्ष के असंगठित क्षेत्र के श्रमिक जिनकी मासिक आय 15000 रुपया या उससे कम है /
- लाभ: 60 वर्ष की उम्र पूरी होने के बाद प्रति महीने न्यूनतम 3000 रूपए की निश्चित पेंशन मिलेगी /

राष्ट्रीय पोषण मिशन योजना

- राष्ट्रीय पोषण मिशन का उद्देश छोटे बच्चों, महिलाओं और किशोरियों में कुपोषण और एनीमिया को कम करना है/

भारत सरकार अधिनियम 1935

- इसमें 321 धारा व 10 अनुसूचियाँ थी ।
- इसने अखिल भारतीय संघ की स्थापना की।
- इस अधिनियम में केन्द्र एवं इकाइयों के बीच तीन सूचियों संघीय सूची (59 विषय), राज्य सूची (54 विषय), और समवर्ती सूची (दोनो के लिए, 36 विषय) के आधार पर शक्तियों का बटवारा किया ।
- इसने केन्द्र में द्वैध शासन प्रणाली का शुभारंभ किया और प्रान्तों में द्वैध शासन व्यवस्था समाप्त कर दी ।
- इसने 11 राज्यों में से 6 में द्विसदनीय व्यवस्था प्रारम्भ की ।
- इसने भारत शासन अधिनियम 1858 द्वारा स्थापित भारत परिषद को समाप्त कर दिया।
- इसके अन्तर्गत भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना हुई ।
- इसके तहत 1937 में संघीय न्यायालय की स्थापना हुई ।

अध्याय - 2

राष्ट्रीय आंदोलन में गाँधी का योगदान

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गाँधी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए आंदोलन की अगुवाई की थी। महात्मा गाँधी की शांतिपूर्ण और अहिंसक नीतियों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता संघर्ष का आधार बनाया। मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को हुआ था। दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आने के बाद, गोपाल कृष्ण गोखले ने महात्मा गाँधी को भारत में चिंताओं और संघर्ष से परिचित कराया। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन के अहिंसक अभियानों की एक श्रृंखला शुरू की गई थी। विरोध मुख्य रूप से नमक कर, भूमि राजस्व, सैन्य खर्चों को कम करने आदि के खिलाफ थे।

चंपारण और खेड़ा आंदोलन 1918 में खेड़ा सत्याग्रह और चंपारण आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए गाँधी के पहले महत्वपूर्ण कदमों में से एक था।

रवींद्रनाथ टैगोर ने गाँधी को वर्ष 1920 में महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी का पहला आंदोलन असहयोग आंदोलन के साथ शुरू हुआ। इस आंदोलन का नेतृत्व महात्मा गाँधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किया था। यह अहिंसात्मक प्रतिरोध के देशव्यापी आंदोलन की पहली श्रृंखला थी। आंदोलन सितंबर 1920 से फरवरी 1922 तक चला। अन्याय के खिलाफ लड़ाई में, गाँधी के हथियार असहयोग और शांतिपूर्ण प्रतिरोध थे। लेकिन नरसंहार और संबंधित हिंसा के बाद, गाँधी ने अपना ध्यान पूर्ण स्व-शासन प्राप्त करने पर केंद्रित किया। यह जल्द ही स्वराज या पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता में बदल गया। इस प्रकार, महात्मा गाँधी के नेतृत्व में, कांग्रेस पार्टी को नए संविधान के साथ स्वराज के उद्देश्य से फिर से संगठित किया गया। महात्मा गाँधी ने स्वदेशी नीति को शामिल करने के लिए अपनी अहिंसा नीति को आगे बढ़ाया, जिसका अर्थ था विदेशी निर्मित वस्तुओं की अस्वीकृति। महात्मा गाँधी ने सभी भारतीयों को ब्रिटिश निर्मित वस्त्रों के बजाय खादी पहनने के लिए संबोधित किया।

- ***गाँधी युग और असहयोग आंदोलन***
- 1916 ई. के लखनऊ अधिवेशन में एनीबेसेंट के सहयोग से कांग्रेस के उदारवादी और उग्रवादी एक हो गए।
- भारत में होमरूल आंदोलन एनीबेसेंट ने आरम्भ किया।
- महात्मा गाँधी ने पहली बार भूख हड़ताल अहमदाबाद मिल मजदूरों के हड़ताल (1918 ई.) के समर्थन में की थी।
- गाँधी जी ने 1918 ई. में गुजरात में <u>कर नहीं आंदोलन</u> चलाया। गाँधी जी ने इस कानून के विरुद्ध 6 अप्रैल 1919 ई. को देशव्यापी हड़ताल करवायी।
- दक्षिणी अफ्रीका से भारत आने के बाद गाँधी जी अपना प्रथम सत्याग्रह चम्पारण (बिहार) में किया।
- 1920 ई. के कांग्रेस के विशेष अधिवेशन की अध्यक्षता लाला लाजपत राय जी की थी जिसमें असहयोग के प्रस्ताव को रखा गया था।
- लॉर्ड चेम्सफोर्ड के शासन काल में गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया था।
- भारत में असहयोग आंदोलन 1920 में शुरू हुआ था।
- गदर पार्टी के संस्थापक लाला हरदयाल थे।
- 5 फरवरी 1922 ई. को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिलें के चौरी चौरा नामक स्थान पर असहयोग आंदोलन कारियों ने क्रोध में आकर थाने में आग लगा दी। जिससे एक थानेदार एवं 21 सिपाहियों की मृत्यु हो गयी। इस घटना से दुःखी होकर गाँधी जी ।। फरवरी 1922 ई. को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया।
- 13 अप्रैल 1919 ई. को अमृतसर में जलियाँवाला बाग हत्या कांड हुआ। इस जनसभा में जनरल डायर ने अन्धाधुन्ध गोलियां चलवाई। इस हत्या कांड ने लगभग 1000 लोग मारे गए। इस हत्या कांड में हंसराज नामक भारतीय ने डायर को सहयोग दिया था।
- इस हत्या कांड के विरोध में महात्मा गाँधी ने केसर – ए - हिन्द की उपाधि, जमना लाल बजाज ने राय बहादूर, रवींद्रनाथ टैगोर ने सर, (नाईटहुड) की उपाधि वापस लौटा दी।
- जलियाँवाला बाग हत्या कांड की जांच के लिए सरकार ने अक्टूबर , 1919 ई. में लॉर्ड हंटर की अध्यक्षता में एक कमेंटी का गठन किया। इसमें पांच अंग्रेज एवं तीन भारतीय (सर चिमन लाल सीता लवाड ,साहबजादा सुल्तान अहमद , एवं जगत नारायण)सदस्य थे।
- जनरल डायर की हत्या उधमसिंह ने की थी।
- जलियाँवाला बाग कभी जल्ली नामक व्यक्ति की सम्पति थी।
- रौलेट एक्ट को काला कानून तथा आतंकवादी और अपराध कानून कहा गया है।
- रौलेट एक्ट को 18 मार्च 1919 को कानूनी रूप दिया गया।
- रौलेट एक्ट के खिलाफ प्रदर्शन ही महात्मा गाँधी का भारत में पहला राजनीतिक आंदोलन था। अर्थात् उनकि राजनीतिक आंदोलन की सुरुआत थी।
- रौलेट एक्ट के अनुसार किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये गिरफ्तार किया जा सकता था। और उसके विरुद्ध न कोई अपील न कोई दलील और न कोई वकील किया जा सकता था। गाँधी जी ने इस कानून के के विरुद्ध 6 अप्रैल 1919 ई. को देशव्यापी सत्याग्रह की तारीख तय की
- "बाल गंगाधर तिलक ने कहा होमरूल मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है" और इसे में लेकर रहूँगा।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भारतीय राजनीति का शांतिकाल प्रथम विश्वयुद्ध के काल को कहा जाता है।
- खिलाफत आंदोलन के सम्बन्ध में इंग्लैंड भेजे गए शिष्टमण्डल का नेतृत्व डा. अंसारी ने किया था। अंग्रेजों के विरुद्ध मुसलमानों का सहयोग व समर्थन करने के लिए गाँधी जी ने खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया था।
- मुसलामनों ने अंग्रेजों की निति के विरुद्ध खिलाफत आंदोलन चलाया था।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में प्रथम विश्वयुद्ध के काल को आंधी से पूर्व शांति का काल कहा गया है।
- 1916 ई. में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ समझौता हुआ था। इस समझौते के बारे में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने कहा था की " भारत के इतिहास में यह सुनहरा दिन था "।

- 17 अक्टूबर 1919 को समूचे देश में खिलाफत दिवस मनाया गया।

गाँधी युग और सविनय अवज्ञा आंदोलन

- सहयोगी गाँधी 1920 में असहयोग गाँधी बन गए।
- दिसम्बर 1921 ई. में अहमदाबाद में अधिवेशन में कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को चलाने कअ निश्चय किया इस आंदोलन का उद्देश्य था – नमक कर तोड़ना।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरम्भ गाँधी जी ने दांडी यात्रा से किया
- 12 मार्च 1930 को गाँधी जी ने अपने 78 चुने हुए अनुयायियों के साथ साबरमती आश्रम से दांडी समुद्र तट तक यात्रा शुरु की 24 दिनों की लम्बी यात्रा के उपरान्त 5 अप्रैल 1930 को दांडी में गाँधी जी और उनके अनुयायियों ने समुद्र से नमक बनाकर सांकेतिक रूप से नमक कानून को भंग किया नमक कानून को तोड़ने से ओपचारिक रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन का सुभारम्भ हुआ।
- स्वराज्य दल का पहला अधिवेशन मार्च 1923 ई. में इलाहाबाद में बुलाया गया।
- गाँधी जी के दांडी यात्रा को सुभाष चन्द्र बोस ने नेपोलियन का पेरिस मार्च और मुसोलिनी का रोम मार्च कहा है।
- स्वराज्य दल की स्थापना। जनवरी 1923 ई. में कि गयी। इसकी स्थापना का श्रेय देशबंधु चित्तरंजन दास और पण्डित मोतीलाल नेहरु को है।
- भारत की समस्या पर विचार करने के लिए 12 नवम्बर 1930 ई. को इंग्लैंड में प्रथम गोलमेंज सम्मलेन हुआ।
- द्वितीय गोलमेंज सम्मलेन की बैठक सितम्बर 1931 ई. में प्रारम्भ हुआ।
- तृतीय गोलमेंज सम्मेलन की बैठक 17 नवम्बर 1932 ई. को बुलाई गयी।
- सरकार के दमन और कांग्रेस के आंदोलन से उत्पन्न स्थिति को ठीक करने के लिए सरकार और गाँधी जी के बीच 5 मार्च 1931 को गाँधी – इरविन समझौता हुआ था।
- तीनों गोलमेंज सम्मेलनों के समय इंग्लैंड का प्रधानमंत्री जेम्स रैम्जे मैक्डोनाल्ड था।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर को लन्दन में हुई तीनों गोलमेंज सभाओं में अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में बुलाया गया था।
- प्रशासनिक सुधारों के अध्ययन के लिए इंग्लैंड की सरकार ने 1928 ई. में साइमन कमीशन भारत भेजा। भारतीयों ने इसका विरोध इसलिए किया की कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज थे।
- अविनय अवज्ञा आंदोलन में पठान सत्याग्रहियों पर गोली चलाने से गढ़वाल रायफल्स ने इनकार कर दिया था।
- 1928 ई. में आयोजित सर्वदलीय सम्मलेन की सिफारिशों के आधार पर पण्डित मोती लाल नेहरु ने भारत के लिए एक संविधान का प्रारूप तैयार करने का प्रयास किया।
- 1928 ई. में नेहरु रिपोर्ट को पण्डित मोतीलाल नेहरु ने तैयार किया।
- 1922 ई. के कांग्रेस के गया अधिवेशन का सभापतित्व चित्तरंजन दास ने किया था।
- 1922 ई. को मेंवाड़ भील आंदोलन का नेता मोतीलाल तेजावत था।
- बारदोली सत्याग्रह का नेतृत्व सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया था।
- सरदार पटेल को सरदार की उपाधि बारदोली की महिलाओं ने प्रदान की थी।
- नेहरु रिपोर्ट को डा. जकारिया ने एक परिपक्क तथा राजमर्मज्ञतापूर्ण रिपोर्ट कहा है।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी 1928 ई. को भारत आया। इसे वाइट मैन कमीशन भी कहते हैं।
- साइमन कमीशन लॉर्ड इरविन के समय में भारत आया था , साइमन कमीशन का क्लीमेंट एटली ऐसा सदस्य था, जो बाद में ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बना।
- 17 नवम्बर 1928 को साइमन कमीशन का विरोध करते समय लाठी चार्ज में लगी गहरी चोट के कारण लाला जी की मृत्यु हो गयी।
- चम्पारण का किसान आंदोलन नील की खेती से सम्बन्धित था।
- पाकिस्तान शब्द का सृजन चौधरी रहमत अली ने किया था।
- मई 1934 ई. में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।

अध्याय – II

भारत की विदेश नीति के सिद्धांत और इसके निर्माण में नेहरू का योगदान

भारत के विदेश सम्बन्ध

भारत की विदेश नीति का विकास

विदेश नीति वेश्विक घटनाओं से सम्बन्धित है ! यदि आप राष्ट्र की कल्पना एक व्यक्ति के रूप में करते हैं तो विदेश नीति के विषय में आपको व्यक्ति द्वारा अपने आसपास के वातावरण से सम्बन्ध रखने एवम् संचालित होने के रूप में विचार करना होगा ! उदाहरण के लिए , कोई व्यक्ति पहचान , स्व – परिभाषा एवम् स्व –हितों के एक समुच्चय के माध्यम से संचालित होता है और सम्बन्धों (परिवार , मित्रों , प्रतिस्प्रधियों , शत्रुओं आदि) के एक जाल में उलझा हुआ होता है ! व्यक्ति की कुछ इच्छा और लक्ष्य होते हैं ! इस प्रकार , अपनी क्षमताओं के आधार पर कोई व्यक्ति जीवन पर्यन्त अपने लक्ष्यों और इच्छाओं को प्राप्त करने के लिए अपने सम्बन्ध बनाने और उन्हें आकार देने में लगा रहता है ! किसी व्यक्ति के लिए ये लक्ष्य और इच्छायें प्रायः सुरक्षा और आत्म – विकास से सम्बन्धित होती हैं!

सम्प्रभु राष्टों के मामलों में इन लक्ष्यों और इच्छाओं को राष्टीय हित कहा जा सकता हैं ! अपने सटीक रूप में राष्टीय हित समय – समय पर परिवर्तित होते रह सकते हैं , लेकिन हमेशा इसके मूल में सुरक्षा (सेन्य तेयारी , आन्तरिक और बाह्य सुरक्षा) , आर्थिक कल्याण जेसे कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, व्यापार , निर्धनता उन्मूलन आदि और राष्ट्र का दर्जा वर्तमान विश्व व्यवस्था में राजनितिक स्तिथि जेसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता होते हैं ! विदेश नीति , इन्हीं हितों की अभिव्यक्ति एवम् उन्हें प्राप्त करने की रुपरेखा हैं ! जे. बंदोपाध्याय के अनुसार , यह अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में उद्देश्य एवम् माध्यमों का चुनाव करने की प्रक्रिया होती हैं ! बहुत सरल शब्दों में कहे तो विदेश नीति , अन्य राष्टों के साथ सम्बन्ध बनाने और उसे बनाए रखने के लिए राष्टीय प्रतोकोल हैं ! इस प्रकार , भारत की विदेश नीति ऐसे विश्व में राष्टीय हितों को परिभाषित , अभिव्यक्त और प्राप्त करने का प्रयास करने करती है जहां ये हित कई प्रकार से राष्ट्र की सीमाओं के बाहर स्तिथ तत्वों और कारको पर निर्भर होते हैं !

निर्धारक : भारत की विदेश नीति को आकार प्रदान करने वाले तत्व और कारक (Determinats : Actors and Factors Shaping India 's Foreign Policy) : – किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति एवम् साथ ही इसकी सफलता या असफलता कई कारकों से निर्धारित होती है ! उनमें से कुछ इस प्रकार है :

- ***इतिहास :-*** राजनीतिक परम्परा और दार्शनिक आधार क्योंकि भारत के मामले में शान्तिपूर्ण सह –अस्तित्व एवम् गेर – आक्रमता को इसके इतिहास और संस्कृती के साथ – साथ राजनीतिक परम्परा से जोड़ा जा सकता हैं !

- ***भूगोल :-*** स्थान और संसाधन – भू – राजनीतिक और भू रणनीति : भारत में कई नदियाँ , राष्टों की सीमाओं से परे विस्तारित होने वाली हैं अर्थात भारत सहित कई पड़ोसी राष्टों से होकर भी बहती हैं , उदाहरण के लिए गंगा , ब्रह्पुत्र , एवम् तीस्ता इत्यादि ! हिमालय और हिन्द महासागर दोनों ही भारत की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं !

- ***आर्थिक विकास :-*** किसी देश के आर्थिक विकास की आवश्यकता एवम् आर्थिक विकास की अवस्था उस देश की विदेश नीति और इनसे सम्बन्धित विकल्पों में माध्यमों एवम् उद्देश्यों दोनों तरीको से योगदान करती हैं !
- घरेलू वातावरण :- इसमें देश में उपस्थित विभिन्न संस्थाएं , राजनीतिक वातावरण और राष्टीय हितों पर आम सहमती , आवश्यकताए , महत्वकांक्षाए एवम् क्षमताये , नेतत्व तथा नोकरशाही इत्यादि शामिल हैं!

- ***अंतर्राष्ट्रीय वातावरण :-*** युद्ध , शांति अर्थात एक शान्तिपूर्ण बाह्य वातावरण आर्थिक वृद्धि और विकास में सहायक होता हैं !

  विदेश नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के साधनों के रूप में राजनयिक , आर्थिक और सेन्य साधनों को रखा जा सकता हैं ! विगत कई वर्षों में भारत की विदेश नीति में हुए विकास को द्रष्टिगत रखते हुए उपयुक्त विमर्श के महत्व को पहचाना जा सकता हैं !

2. भारत की विदेश नीति का विकास (Evolution of India 's Foreign Policy)

अध्याय – I
शिक्षा मनोविज्ञान का परिचय

शिक्षा मनोविज्ञान :-

दोस्तों , शिक्षा मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है शिक्षा + मनोविज्ञान।

सर्वप्रथम शिक्षा क्या है :- शिक्षा शब्द की उत्पत्ति शिक्ष धातु से (संस्कृत भाषा) हुई है जिसका अर्थ होता है, सीखना।

शिक्षा के तीन आयाम -

शिक्षक छात्र पाठ्यक्रम

*जॉन डी. वी. के अनुसार :- त्रिध्रुवीय -

1. शिक्षक
2. छात्र
3. पाठ्यक्रम

*जॉन एडम्स के अनुसार :-

द्वि ध्रुवीय - शिक्षक _____ छात्र

- एज्युकेशन शब्द की उत्पत्ती लैटिन भाषा के एडुकेटम से हुई है।
- एडुकेटम का अर्थ - अंदर से बाहर निकालना।
- शिक्षा का संकीर्ण अर्थ :- वह शिक्षा जो निश्चित समय व स्थान से संबंधित होती है।
- शिक्षा का व्यापक अर्थ :- वह शिक्षा जो समय व स्थान से संबंधित नहीं होती है, अपितु आजीवन चलती रहती है।

3 R = लिखना, पढ़ना, गणना करना। (Reading, Writing, Arthamatic

4 H = मानसिक विकास - Head

भावात्मक विकास - Heart

क्रियात्मक विकास - Hand

शारीरिक विकास -Health

3 H का श्रेय / वर्तमान शिक्षा के विकास का श्रेय - पेस्टोलोजी।

परिभाषाएं :-

= **स्वामी विवेकानंद :-** मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।

= **महात्मा गाँधी :-** शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा की सर्वोत्तम विकास की अभिव्यक्ति है।

= **जॉन डी. वी :-** शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह वातावरण के ऊपर नियंत्रण स्थापित करता है।

= **डुनेविले के अनुसार :-** शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव व अनुभव आ जाते हैं, जो बालक को जन्म से मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।

= **पेस्टोलोजी :-** शिक्षा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, विरोधहीन तथा प्रगतिशील विकास है।

शिक्षा की विशेषताएं :-

- जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।
- शिक्षा सामाजिक व सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है।
- शिक्षा औपचारिक व अनौपचारिक दोनों रूप में हो सकती है।
- शिक्षा आदर्शात्मक / मूल्यात्मक है।

शिक्षा के प्रकार :-

1. औपचारिक - स्कूल,
2. अनौपचारिक - परिवार,
3. निरौपचारिक - पत्राचार।

मनोविज्ञान

दोस्तों , मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणियों के व्यवहार एवं मानसिक तथा दैहिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यवहार में मानव व्यवहार के साथ-साथ पशु-पक्षियों के व्यवहार को भी सम्मिलित किया जाता हैं।

- "मनोविज्ञान" शब्द का शाब्दिक अर्थ है- मन का विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी भाषा के Psychology शब्द से बना है।
- 'साइकॉलोजी' शब्द की उत्पति यूनानी(लैटिन) भाषा के दो शब्द 'साइकी(Psyche) तथा लोगस(Logos) से मिलकर हुई है। 'साइकी' शब्द का अर्थ -आत्मा है जबकि लोगस शब्द का अर्थ -अध्ययन या ज्ञान से है इस प्रकार से हमने समझा की अंग्रेजी शब्द "साइकॉलोजी" का शाब्दिक अर्थ है- आत्मा का अध्ययन या आत्मा का ज्ञान।

दोस्तों, अब हम मनोविज्ञान की कुछ विचारधाराओं को समझते है –

1. मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान- यह मनोविज्ञान की प्रथम विचारधारा है जिसका समय आरम्भ से 16वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक प्लेटो, अरस्तू, देकार्त, सुकरात आदि को माना जाता है। यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया है। साइकॉलोजी शब्द का शाब्दिक अर्थ भी "आत्मा के अध्ययन" की ओर इंगित करता है।

2. मनोविज्ञान मन/मस्तिष्क का विज्ञान - यह मनोविज्ञान की दूसरी विचारधारा है जिसका समय 17 वीं से 18वीं सदी तक माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक जॉन लॉक, पेम्पोलॉजी, थॉमस रीड आदि थे। आत्मा के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा के अस्वीकृत हो जाने पर मध्ययुग (17वीं शताब्दी) के दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। इनमें मध्ययुग के दार्शनिक पेम्पोलॉजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3. मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान - यह मनोविज्ञान की तीसरी विचारधारा है जिसका समय 19वीं शताब्दी माना जाता है। इस विचारधारा के समर्थक विलियम वुट, ई.बी.टिचनर, विलियम जेम्स, आदि को माना जाता है। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मन या मस्तिष्क के विज्ञान की जगह मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में व्यक्त किया गया। टिचनर, विलियम जेम्स, विलियम वुट आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप में स्वीकार करके कहा कि मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है।

५. **मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान** - यह मनोविज्ञान की नवीनतम विचारधारा है जिसका समय बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से आज तक माना जाता हैंयह मनोविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण विचारधारा हैं। इस विचारधारा के समर्थक वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि को माना जाता है। मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। वाट्सन, वुडवर्थ, स्किनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को व्यवहार के एक निश्चित विज्ञान के रूप में स्वीकार किया। वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस विचारधारा को ही एक सर्वमान्य विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

मनोविज्ञान की परिभाषाएं

वुडवर्थ –"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा। फिर इसने अपने मन को त्यागा। फिर इसने चेतना खोई। अब वह व्यवहार को अपनाये हुए है।

अध्याय – 2

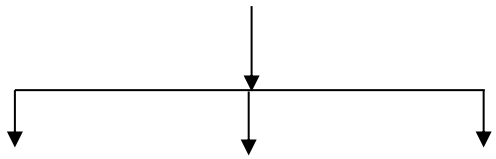
कक्षा में अध्यापकों की भूमिका

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एडम्स कहते हैं कि शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है, शिक्षा द्विमुखी रूपी प्रक्रिया की दो धुरियाँ हैं, एक है 'शिक्षक' तथा दूसरी है 'शिक्षार्थी'। अतः शिक्षक को बालक की प्रवृत्तियों, रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं और आवश्यकताओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

किसी भी विषय के शिक्षण की सफलता अध्यापक पर ही निर्भर करती है। विद्यालयी कक्षाओं में बालकों के लिए अध्यापक ही प्रेरणा और ज्ञान का सहज एवं सुलभ स्रोत है। एक शिक्षक को अपने दायित्वों का भलीभांति निर्वाह करने तथा शिक्षण में सफलता करते हुए निम्न विशेषताओं का होना आवश्यक है -

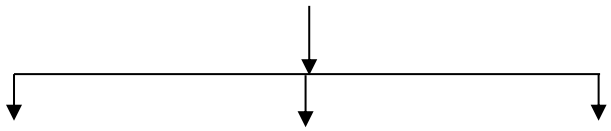
- विषय का पूर्ण ज्ञान - शिक्षक को अपने विषय का नवीनतम पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ताकि वह आत्मविश्वास के साथ प्रभावी अध्यापन करवा सके। प्रतिभावान एवं सृजनात्मक विद्यार्थियों की शंकाओं व कठिनाइयों का निवारण सहजता व स्पष्टता से कर सके तथा ऐसे अधिगमकर्ताओं की गहन अध्ययन के लिए सन्दर्भित पुस्तकों / साहित्य का स्वाध्यायकरने हेतु मार्ग - निर्देशित एवं अभिप्रेरित करने में सक्षम हो।
- प्रभावशाली व्यक्तित्व - अध्यापक का व्यक्तित्व प्रभावशाली हो। वह शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हो। उसके आचार - विचार, रहन - सहन, खान - पान एक आदर्श ही होना चाहिए। ऐसा अध्यापक ही बालकों पर प्रभाव डाल सकता है और उनका सर्वांगीण विकास कर सकता है।
- सहनशीलता - शिक्षक को छात्रों को कोई तथ्य, सिद्धांत या सूझ समझाते समय बहुत ही धैर्यपूर्वक काम लेना चाहिए। शिक्षक में ज्ञान संचय की इच्छा होनी चाहिए। अध्यापक को कभी भी अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए तथा बच्चों को मनोवैज्ञानिक रूप से समझाकर उन्हें ठीक रास्ते पर ले आना चाहिए।
- अध्यापन कार्य में रुचि - शिक्षक को स्वयं में हीनता और उदासीनता की भावना को कभी भी उत्पन्न नहीं देना चाहिए तथा अध्यापन कार्य एवं गहन अध्ययन में रुचि लेनी चाहिए। उसे अधिगम के विभिन्न सिद्धांतों का ज्ञान होना चाहिए।
- आत्मविश्वास - अध्यापक द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक क्रिया में आत्मविश्वास झलकना चाहिए। आत्मविश्वास से शिक्षक अध्यापन कार्य में स्वाभाविक ढंग से समर्थ हो सकता है। आत्मविश्वास के अभाव में विषय में माहिर होने के बावजूद भी शिक्षक उसे सफलतापूर्वक नहीं पढ़ा सकता।
- परिश्रमी तथा कर्तव्यपरायण - अध्यापक को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होना भी आवश्यक है। विद्यार्थियों को उचित रूप से शिक्षा में यथाशक्ति उसे कमी नहीं छोड़नी चाहिए। उसे गम्भीरतापूर्वक अपना पाठ भलीभांति सोच समझकर तैयार करके ही पढ़ाना चाहिए तथा शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए।
- नवीनतम विधि - प्रविधियों का ज्ञान - इस वैज्ञानिक युग में शिक्षक को नवीनतम विधि - प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए तथा आधुनिकतम शैक्षिक दृश्य - श्रव्य शिक्षण - अधिगम सामग्री प्रयुक्त करनी चाहिए। साथ ही बाल - मनोविज्ञान का ज्ञान भी शिक्षक के लिए आवश्यक है।
- सहायक सामग्री का प्रयोग एवं स्वयं निर्माण की कुशलता - उचित शिक्षण के लिए आवश्यक है कि अध्यापक उपयोगी सहायक साधनों का आवश्यकतानुसार उचित प्रयोग करना जानता हो। शिक्षण संबंधी सभी प्रकार की दृश्य - श्रव्य सामग्री को प्राप्त करने, प्रयोग करने एवं उससे पूर्ण शिक्षण के लाभ उठाने में अध्यापक पूरी तरह से योग्य होना चाहिए। साथ ही इस प्रकार की सहायक सामग्री का तथा अन्य साज -

बाल्यावस्था (6-12वर्ष)



पूर्व बाल्यावस्था (6-8 वर्ष) **मध्य बाल्यावस्था (8-10 वर्ष)** **उत्तर बाल्यावस्था (10-12 वर्ष)**

किशोरावस्था (12-18 वर्ष)



पूर्व किशोरावस्था (12-14 वर्ष) **मध्यकिशोरावस्था (14-16 वर्ष)** **उत्तरकिशोरावस्था (16-18 वर्ष)**

महत्वपूर्ण कथन :-

न्यूमैन के अनुसार :-

5 वर्ष की अवस्था बालक के शरीर व मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है।

फ्रायड के अनुसार :-

बालक को जो कुछ भी बनाना होता है, वह प्रथम 4 या 5 वर्षों में बन जाता है।

स्मो के अनुसार :-

बालक के हाथ, पैर, नेत्र प्रारंभिक शिक्षक होते हैं।

थॉर्नडाईक के अनुसार :-

3 से 6 वर्ष के बच्चे अर्द्धस्वप्न अवस्था में होते हैं।

क्रो एण्ड क्रो के अनुसार :-

20 वीं शताब्दी को बालकों की शताब्दी कहा है।

गुडएनफ के अनुसार :-

बालक का जितना भी मानसिक विकास होता है, उसका आधा प्रथम तीन वर्षों में हो जाता है।

शारीरिक विकास शैशवावस्था में –

1. शैशवावस्था अंग्रेजी भाषा के in fancy शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह शब्द लैटिन भाषा के Infast से बना है। जो In + Fast से तात्पर्य है नहीं बोलने की अवस्था कहा जाता है। इस समय में बालक ज्यादातर रोने का कार्य करता है। जो निरर्थक माना जाता है।
2. शैशवावस्था मानव विकास की आधारशिला एवं नीव तैयार होती है। इस काल को जीवन का आधार काल अथवा जीवन का आदर्श काल कहा जाता है।
3. शैशवावस्था के काल में बालक/बालिका में संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है। जिस कारण इसे जीवन का संचयी काल कहा जाता है।
4. इसका समय जन्म - 6 वर्ष तक होता है। जिसमें किसी भी बालक का शारीरिक विकास अन्य विकास की अपेक्षा तीव्र होता है।

भार (Weight)

शैशवावस्था में जन्म से लेकर अंतिम अवस्था अर्थात 6 वर्ष की आयु तक बालको का भार बालिकाओ की अपेक्षा अधिक हो जाता है।

लम्बाई - जन्म के समय किसी बालक की लम्बाई $20\frac{1}{2}$ इंच तथा बालिकाओ की लम्बाई 20 इंच के आसपास होती है। किन्तु दोनों की लम्बाई में बहुत अधिक, अन्तर नहीं पाया जाता है।

- लेकिन शैशवास्था के अन्तर्गत अन्तिम समय में बालक की लम्बाई बालिका की अपेक्षा कुछ अधिक हो जाती है।

सिर एवं मस्तिष्क - शैशवावस्था के काल में जन्म के समय बच्चे के सिर का विकास कुछ शरीर के विकास के $\frac{1}{4}$ हो जाता है। जिस कारण

बालक का सिर उसके शरीर की अपेक्षा अधिक बड़ा दिखाई पड़ता है। और बालक मासूम लगता है।

- जन्म के समय शिशु के सिर का कुछ भार लगभग 350gm के आसपास है।

दांत (Teeth)-

- बाल विकास की प्रक्रिया में किसी भी बालक का जन्म के पूर्व दांत बनने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। लेकिन दांत निकलने की प्रक्रिया जन्म के पश्चात् (8/9 माह में) प्रारम्भ होती है।
- किसी भी बालक या बालिका में जन्म के समय कोई भी दांत नही होता है। लेकिन जन्म से (6-7) माह में सबसे पहले नीचे के दांत निकलना प्रारम्भ होते हैं।
- किसी भी बालक में एक वर्ष की अवस्था तक लगभग छः अस्थाई दांत निकलते है। साथ ही (4 -5) वर्ष की अवस्था में किसी भी बालक अथवा बालिका में कुल 20 अस्थायी दांत विकसित हो जाते हैं। जो क्षय होकर निकल जाते हैं।

हड्डिया [BONES] - जन्म के समय में नवजात शिशु में हड़ियों की संख्या 270 पायी जाती है और हड्डिया (Ca) से निर्मित होती है। जिसमें फोस्फोरस (P) मजबूती प्रदान करता है।

मांसपेशियाँ - शैशवावस्था के कार्यकाल में शारीरिक विकास के अन्तर्गत किसी भी बालक में मांसपेशियों का विकास कुल शरीर के भार के लगभग 23% तक हो जाता है ।

हृदय की धड़कन - शैशवावस्था में जन्म किसी भी बालक के हृदय में धड़कन लगभग (140 P.M.) होती है। जो शैशवावस्था के अंतिम समय अर्थात लगभग 6 वर्ष की आयु के आसपास (100 P.M.) हो जाती हैं ।

बाल्यावस्था (Childhood)

बाल्यावस्था के काल के प्रारम्भिक काल में अर्थात लगभग 9 वर्ष की अवस्था में पूर्व शैशवावस्था का शारीरिक विकास का प्रक्रम है। वह तीव्रता बनी रहती है। लेकिन उत्तरकालीन बाल्यावस्था में बालक तथा बालिका के विकास प्रक्रम में परिपक्वता आ जाती है । जिस कारण इस अवस्था को परिपाढ़ काल कहते है।

बाल्यावस्था में बालक बालिका से आगे रहता है। लेकिन उत्तरकालीन समय तक बालिका का विकास बालक से आगे होता है।

भार [weight] बाल्यावस्था के लगभग 6 वर्ष के समय भार बालक तथा बालिका का भार 16kg हो जाता है। तथा 12 वर्ष की अवस्था के आसपास भार लगभग 29kg के आसपास होता है।

- प्रारम्भिक अवस्था में बालको का भार बालिका से अधिक होता है। लेकिन अन्तर कालीन बाल्यावस्था तक बालिकाओ का भार बालको से अधिक हो जाता है।
- लम्बाई - बाल्यावस्था के काल में शैशवावस्था की अपेक्षा लम्बाई में कुछ कम वृद्धि होती है। प्रारंभिक शैशवावस्था में बालक बालिका से अधिक लम्बा होता है।

लेकिन उत्तरकाल की अवस्था तक बालिकाओ की लम्बाई बालको की अपेक्षा अधिक हो जाती है।

नोट - फिर भी दोनों में 2-3 इंच से अधिक अन्तर नहीं होता।

सिर एवं मस्तिष्क - बाल्यावस्था में बालक/बालिकाओ के सिर के आकार में क्रमशः कुछ कम परिवर्तन होते है। अन्तिम समय पर बालक, बालिका के मस्तिष्क का विकास 90% तक हो जाता है। जिस कारण इस अवस्था में बालक का मानसिक विकास सर्वाधिक होता है।

हड्डिया (Bones) - बाल्यावस्था में अन्तिम समय तक बालक तथा बालिकाओ में हडिडयो की

अध्याय – 6

बुद्धि एवं सृजनात्मकता

सामान्य अर्थ :- बुद्धि विचार करने व समस्त मानसिक क्रियाओं का संगठित रूप होती है।

परिभाषा :-

वुडवर्थ के अनुसार :- बुद्धि कार्य करने की एक विधि है।

टर्मन के अनुसार :- बुद्धि अमूर्त विचारों को सोचने की योग्यता है।

अल्फ्रेड बिने के अनुसार :- बुद्धि इन चार शब्दों में निहित है - ज्ञान, अविष्कार, निर्देश, आलोचना।

स्टर्नबर्ग के अनुसार :- बुद्धि आलोचनात्मक ढंग से सोचने की प्रक्रिया है।

थर्स्टर्न के अनुसार :- बुद्धि विभिन्न वस्तु व विचारों के मध्य जटिल संबंधों को समझने की योग्यता है।

रायबर्न के अनुसार :- बुद्धि समस्या समाधान की योग्यता है।

वेक्सलर / वेश्लर के अनुसार :- बुद्धि एक सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्धेश्यपूर्ण क्रिया करता है तथा समायोजन स्थापित करता है।

बुद्धि एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसमे जटिलता का अंदाज़ इसी बात से लगाया जा सकता है। कि प्राचीन समय से लेकर आज तक बुद्धि की सर्व स्वीकृत परिभाषा नहीं दी जा सकी।

2. बुद्धि की सर्वप्रथम संकल्पना देने का कार्य यूनानियो ने किया जिन्होंने बुद्धि को शक्ति का मनोविज्ञान माना।
3. इसके पशचात बुद्धिकी सर्वप्रथम परिभाषा 19 वी शताब्दी में ऐविगहास ने दी जिनके अनुसार बुद्धि संकलन और मिश्रण की एक योग्यता है।
4. इसके पशचात बिने ने बुद्धि सम्बन्धी अध्ययन में संशोधन करके सन 1911 ई0 में बताया कि बुद्धि बोध पर आधारित उद्देश्य पूर्ण तथा सही निर्णयों पर आधारित खोज परकता के रूप में
5. इसी समय अल्फ्रेड बिने ने बुद्धि के आधार पर निम्नलिखित तीन प्रकार के बालक स्वीकार किये।
   - पहला- प्रतिभाशाली बालक
   - दूसरा- सामान्य बालक

   तीसरा- मंदबुद्धि बालक

बुद्धि की विशेषताएं -

- बुद्धि जन्मजात शक्ति होती है।
- बुद्धि का विकास जन्म से लेकर मध्य किशोरावस्था तक होता है।
- स्पीयरमैन के अनुसार :- 14 - 16 वर्ष तक बुद्धि का विकास होता है।
- टर्मन के अनुसार :- 15 वर्ष तक बुद्धि का विकास होता है।
- बुद्धि पर वंशानुक्रम तथा वातावरण का प्रभाव पड़ता है।
- बुद्धि समस्या समाधान की योग्यता है।
- बुद्धि समायोजन स्थापित करने की योग्यता है।
- बुद्धि तर्क, चिंतन, कल्पना तथा स्मरण करने की योग्यता है।

बुद्धि के प्रकार-

बुद्धि के प्रकार दो व्यक्तियों ने बताये हैं :-

1. थार्नडाइक 2. गैरिट

थार्नडाइक व गैरिट ने बुद्धि के तीन प्रकार बताये हैं

1. मूर्त / गामक बुद्धि
2. अमूर्त बुद्धि
3. सामाजिक बुद्ध

1. मूर्त / गामक बुद्धि :- इस बुद्धि का संबंध यंत्र या मशीनों से होता है, इसलिए इसे यांत्रिक बुद्धि भी कहा जाता है। जैसे - कारीगर,मैकेनिक,इंजीनियर,औद्योगिक कार्यकर्त्ता।
2. अमूर्त बुद्धि :- इसका संबंध पुस्तकीय ज्ञान से होता है। जैसे - लेखक, शिक्षक, दार्शनिक, पेंटर।
3. सामाजिक बुद्धि :- नेता, व्यवसायी, सामाजिक कार्यर्त्ता सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत आते हैं।

द्विव तत्व बुद्धि का सिद्धांत

बुद्धि के दीव कारक सिदान्त का प्रतिपादन स्पीयर मैंन ने सन 1904 में किया था।

- इनके अनुसार की बालक में दो कारक होते है
- G- FACTOR - GENERAL FACTOR (सामान्य कारक)
- S FACTOR - SPECIFIC FACTOR (विशिष्ट कारक)
- किसी भी बालक को सामान्य कारक एक जैसे मिलते है जब कि विशिष्ट कारक अनेक मिलते है।
- सामान्य कारक (G) सभी को जन्म से मिलता है लेकिन सभी के जन्मजात कारक की मात्रा में अंतर होता है । और जन्मजात है । यह कारक अपरिवर्तन होता है।
- जबकि विशिष्ट कारक अर्जित होता है। जिस कारण ये परिवर्तन होता है।
- बुद्धि के प्रत्येक विशिष्ट कारक का सम्बन्ध सामान्य कारक से होता है।
- किसी भी बालक की बुद्धि का कोई विशिष्ट कारक जितने अच्छे तरीके से सामान्य कारक से सम्बंधित होता है। यह बालक इस विशिष्ट क्षेत्र में उतना ही अधिक निपुण होता है।

इसके पश्चात बिने ने बताया कि बुद्धि के अंतर्गत किसी समस्या को समाधान इसके विषय में तर्क करना तथा निशचित निर्णय पर पहुचना उसकी आवश्यक क्रियाये है।

टर्मन के अनुसार

अमूर्त वस्तुओ के विषय में सोचने की योग्यता ही बुद्धि है

वर्त के अनुसार

बुद्धि अपेक्षाकृत नई पारिस्थितियो में समायोजन करने की क्षमता है।

बुद्धि का एक तत्व का सिद्धांत

- इस सिध्दांत का प्रतिपादन अल्फ्रेड बिने ने सन 1911 में किया था ।
- इस सिद्धांत के अन्य प्रमुख समर्थको में टर्मन , स्टरन ऐविगहास का नाम प्रसिद्ध है।
- अल्फ्रेड बिने के इस सिद्धांत के अनुसार किसी भी बालक की बुद्धि अविभाज्य इकाई है।
- कोई भी बालक जब मानसिक कार्य करता है तो इसकी सम्पूर्ण बुद्धि सक्रिय होकर एक समय में एक ही प्रकार का कार्य संचालित करती है।
- कुछ समय पशचात इस सिदान्त का खंडन करते हुए मनोवैज्ञानिक ने बतलाया की यह सत्य नहीं है। कि जो बालक गणित में निपुण है। वह कला में निपुण नहीं हो सकता अर्थात हमारी बुद्धि एक ही समय में अनेक प्रकार के कार्यो को कर सकती है।

बहुतत्व बुद्धि का सिद्धांत

बुद्धि के बहुकारक सिद्धांत का प्रतिपादन थानडाईक ने किया। थानडाईक के अनुसार किसी भी बालक की बुद्धि असंख्य स्वतंत्र कारको से मिलकर बनी होती है।

- किसी बालक की बुद्धि में असत्य कारक होते है। और हर एक कारक का दूसरें कारक से कोई लेना देना नहीं होता है।

विचलन बुद्धि लब्धि के प्रतिपादक - (D) डेविड वेक्सलर

- बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता :-
  सामान्य बौद्धिक स्तर का आकलन।

  शैक्षिक सफलता का पूर्वानुमान।

  व्यक्तित्व का मूल्यांकन।

  कक्षा का वर्गीकरण करने में सहायक।

  शैक्षिक - व्यवसायिक निर्देशन देने में सहायक।

संवेगात्मक बुद्धि

- संवेगात्मक बुद्धि शब्द का सबसे पहले प्रयोग करने वाले विद्वान - जॉन मेयर (अमेरिका) पीटर सेलोवी, 1990 पुस्तक - What is E।
- संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिपादक - डेनीयल गोलमैन (अमेरिका) ने 1995 में अपनी पुस्तक " संवेगात्मक बुद्धि लब्धि से अधि महत्वपूर्ण क्यों "

संवेगात्मक बुद्धि के तत्व :-

- आत्मजागरूकता
- आत्मनियंत्रण
- अभिप्रेरणा
- सहानुभूति
- सामाजिक कौशल।

संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता ।

- जीवन में सफलता प्रदान करने में सहायक?
- जीवन को सुखमय तथा शान्तिप्रिय बनाने में सहायक।
- समायोजन स्थापित करने में सहायक।
- भविष्यवाणी करने में सहायक।
- भावनाओं को समझने तथा उनका उचित प्रबंधन करने में सहायक।
- मूल्यांकन में सहायक।
- संवेगों की अभिव्यक्ति में सहायक।

संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिमान :-

- योग्यता आधारित प्रतिमान - जॉन मेयर पीटर सेलोवी।
- गुण आधारित प्रतिमान - K.V. पेट्राईडस।
- मिश्रित प्रतिमान - डेनियल गोलमैन।

सृजनात्मकता का अर्थ

भिन्न-भिन्न वैज्ञानिकों द्वारा सृजनात्मकता को भिन्न-भिन्न ढग से परिभाषित किया गया है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत सृजनात्मकता की कुछ परिभाषाएँ निम्नवत है।

- डीहान तथा हेविंगहर्स्ट के अनुसार "सृजनात्मकता वह विशेषता है, जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करे। यह नवीन वस्तु संपूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है। अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया।"

- डेवहल के शब्दों में "सृजनात्मकता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।
- क्रो एवं क्रो के अनुसार "सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।"
- विलसन के शब्दों में "सृजनात्मकता मानव मन की वह शक्ति है जो संबंधों को प्रत्यावर्तित कर नये विषयवस्तु का निर्माण करती है तथा नये संबंधों का निर्माण करती है।
- गिलफोर्ड के शब्दों में "सृजनात्मकता प्रक्रिया वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ नया निर्मित होता है- विचार, वस्तु जिसमें पुराने तत्वों को नवीन तरीके से व्यवस्थित किया जाता है, नवीन यृजन किसी समस्या का समाधान प्रस्तुत करता हो"।

राजस्थान का विविध

राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व उपनाम एक नजर

	व्यक्ति	उपनाम
➢	हरिभाऊ उपाध्याय	द साहब
➢	जयनारायण व्यास	लोकनायक, धुन के धनी, मस्साब, लक्कड़ और कक्कड़, शेर
➢	स्वामी केशवानन्द	शिक्षा संत (बचपन का नाम बिरमा)
➢	अमरचन्द भाटिया	राजस्थान का भामाशाह (1857 की क्रांति के प्रथम शहीद राजस्थान का मगंलकार्य
➢	गणेश लाल व्यास	उस्ताद
➢	जुगलू किशोर चतुर्वेदी	दुसरा जवाहर लाल नेहरू
➢	भोगी लाल पांडिया	वागड़ का गाँधी
➢	मोती लाल तेजावत	बावजी, आदिवासियों का मसीहा
➢	लक्ष्मी कुमारी चुडावत	रानी जी
➢	सत्यभामा	गाँधी जी की मानस पुत्री
➢	गोकुल भाई भट्ट	राजस्थान का गाँधी, भरतपुर का बुढ़ा शेर
➢	विजय सिंह	किसान आन्दोलन का जनक(बचपन का नाम भूपसिंह)
➢	मोहन लाल सुखाड़िया	आधुनिक राजस्थान का निर्माता, मेवाड़ का राजनैतिक सितारा
➢	जमना लाल बजाज	गुलाम नम्बर 5 एवं गाँधीजी का पांचवा
➢	अर्जुन लाल सेठी	उग्र क्रान्ति का जनक राज का दक्षिनी
➢	माणिक्य लाल वर्मा	मेवाड़ का गाँधी
➢	रीमा दत्ता	राजस्थान की जलपरी
➢	सीमा मिश्रा	राजस्थान की लता
➢	राजेन्द्र सिंह	पानी वाले बाबा
➢	कर्नल टाड़	घोडे वाले बाबा, राजस्थानका इतिहास का पितामाह
➢	कर्नल किरोड़ी सिंह बैंसला	पटरी वाले बाबा
➢	किशन लाल जोशी	रेल वाले बाबा

➢	कैलाश सांखला	टाईगर मेन
➢	अशोक टाक	कमल मन
➢	राव चन्द्रसेन	मारवाड का प्रताप, भुला-बिसरा राजा, प्रताप का अग्रगामी
➢	उम्मेद सिंह	आधुनिक मारवाड़ का पिता, मारवाड़ का कर्णधार
➢	सुरेश मिश्रा	पालीवाल टाईगर
➢	राय सिंह	राजपुताने का कर्ण (मुंशी देवी प्रसाद ने कहा)
➢	परमानन्द चोवल	भैंसों का चितेरा
➢	गोपाल लाल बाबा	भीलों का चितेरा
➢	सोभाभमल गहलोत	नीड़ का चितेरा
➢	कृपाल सिंह सेखावत	बल्यू पॉटरी का जनक, राजस्थान की धरती का चितेरा
➢	सूरजमल जाट	अफलातून जाटों का प्लेटो
➢	बांके दास	राजस्थान का बीरबल
➢	दादू दयाल	राजस्थान का कबीर
➢	विजय दान देथा	राजस्थान का शेक्सपियर, विज्जी
➢	शिव चन्द भरतिया	राजस्थान का भारतेन्दु
➢	जानकी लाल भाण्ड	मंकी मेन, राजस्थान का बहरूपिया
➢	नीलू	राजस्थान की श्रीदेवी
➢	संत दुर्लभ	राजस्थान की नृसिंह
➢	मोयंद दास	मारवाड़ का चाणक्य
➢	गहलोत मेलसी	राजस्थान का अबुल फजल (मुंशी देवी प्रसाद ने कहा)
➢	रावलूणकरण	कलयुग का कर्ण
➢	दामोदर दास व्यास	राजस्थान का लौह पुरुष
➢	अशोक गहलोत	युवा मुख्यमत्री मारवाड़ का गाँधी
➢	मीराबाई	राजस्थान की राधा
➢	जोसुन्दर सिंह बरहत	राजस्थान का चंद्रशेखर
➢	गंगापत लाल दागी	गीन्गला रा बापू
➢	राव चुडा	मेवाड़ का भीष्म पितामाह

➢	मानसिंह	फर्जन्द, राजा (अकबर द्वार प्रदत्त)	कछवाहा वंशीय शासक
➢	जयसिंह	मिर्जा राजा (शहाजहाँ द्वार प्रदत्त)	कछवाहा वंशीय शासक
➢	बप्पा रावल	काल भोज	गहलोत वंशीय शासक
➢	विग्रराज चतुर्थ	बीसलदेव / कवि बान्धव	चौहान वंशीय शासक
➢	पृथ्वीराज तृतीय	रायपिथौरा दलपूगल	चौहान वंशीय शासक
➢	मिहिर भोज	भोज प्रथम,आदिवरहि, प्रयास	प्रतिहार वंशीय शासक
➢	राव चुडा	भीष्म पितामाह	मेवाड़ का सिसोदिया शासक

राजस्थान के प्रमुख युद्ध एक नजर

	युद्ध	सन	शासक	विजेता शासक
➢	तराईन का प्रथम युद्ध	1191	मोहम्मद गौरी व प्रथ्वीराज चौहान	प्रथ्वीराज चौहान
➢	तराईन का द्वतीय युद्ध	1192	प्रथ्वीराज चौहान व मोहम्मद गौरी	मोहम्मद गौरी
➢	रणथम्भौर का युद्ध	1301	हम्मीर चौहान और अलाउद्दीन खिलजी	अलाउद्दीन खिलजी
➢	चित्तौड़ का युद्ध	1303	रतन सिंह और अलाउद्दीन खिलजी	अलाउद्दीन खिलजी
➢	सिवाना का युद्ध	1308	शीतलदेव चौहान और अलाउद्दीन खिलजी	अलाउद्दीन खिलजी
➢	जालौर का युद्ध	1311	कान्हड़देव और अलाउद्दीन खिलजी	अलाउद्दीन खिलजी
➢	सारंगपुर का युद्ध	1446	महाराणा कुम्भा व महमूद खिलजी	महाराणा कुम्भा
➢	गामरोण का युद्ध	1518	राणा सांगा व महमूद खिलजी	राणा सांगा
➢	खातोली का युद्ध	1518	राणा सांगा व इब्राहिम लोदी	राणा सांगा
➢	बाड़ी का युद्ध	1519	राणा सांगा व इब्राहिम लोदी	राणा सांगा
➢	खानवा का युद्ध	1527	बाबर व राणा सांगा	बाबर
➢	पहेबा का युद्ध	1541	राव जेंतसी व मालदेव	मालदेव

➢	सामेल (नैतारण)का युद्ध	1544	मालदेव व शेरशाह	शेरशाह
➢	हल्दीघाटी का युद्ध	1576	अकबर व महाराणा प्रताप	अकबर
➢	राजमहल का युद्ध	1747	ईश्वरी सिंह व माधोसिंह	ईश्वरी सिंह
➢	बगरू का युद्ध	1748	ईश्वरी सिंह व माधोसिंह	मांधोसिंह
➢	भटवाड़ा का युद्ध	1761	शत्रुसाल व माधोसिंह	शत्रुसाल
➢	तुंगा का युद्ध	1787	प्रताप सिंह व विजयसिंह और मराठा नेता महादजी सिंधिया	प्रताप सिंह व विजयसिंह
➢	आउवा का युद्ध	1857	कुशाल सिंह व अंग्रेजी सेना, जोधपुर सेना	कुशाल सिंह

राजस्थान के प्रमुख स्वतन्त्रता सेनानी

➢	**स्वतन्त्रता सेनानी**	**स्थान**
➢	स्वामी केशवानान्द	सीकर
➢	जयनारायण व्यास	जोधपुर
➢	केसरी सिंह बारहठ	भीलवाड़ा
➢	अर्जुन लाल सेठी	जयपुर
➢	रामनारायण चौधरी	सीकर
➢	लादूराम	सीकर
➢	जमना लाल बजाज	सीकर
➢	बालमुकुन्द बिस्सा	जोधपुर
➢	आदित्येन्द्र	भरतपुर
➢	हीरा लाल शास्त्री	जयपुर
➢	माणिक्य लाल वर्मा	भरतपुर
➢	भामाशाह	पाली

➢	मोती लाल तेजावत	उदयपुर
➢	भोगी लाल पण्ड्या	डूंगरपुर
➢	सागरमल गोपा	जैसलमेर
➢	स्वामी गोपालदास	चुरू
➢	गोकुल भाई भट्ट	सिरोही
➢	नरोत्तम लाल जोशी	झुंझुनूं
➢	वैद्य मघाराम	बीकानेर
➢	हरिभाऊ उपाध्याय	ग्वालियर (म.प्र.)
➢	गोपाल सिंह खरव	अजमेर
➢	डॉ नगेन्द्र सिंह	डूंगरपुर
➢	विजय सिंह पथिक	बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश)
➢	ज्वाला प्रसाद शर्मा	अजमेर

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा लिखित पुस्तकें

	स्वतन्त्रता सेनानी	स्थान
➢	जयनारायण व्यास	पीप (अंग्रेजी पाक्षिक पत्रिका)
➢	सागरमल गोपा	आजादी के दीवाने, जैसलमेर में गुण्डाराज
➢	माणिक्य लाल वर्मा	मेवाड़ का वर्तमान शासन
➢	विजय सिंह पथिक	व्हॉट आर इंडियन स्टेट्स
➢	केसरी सिंह	दुर्गादास चरित्र, प्रताप चरित्र, रठी रानी, चेतावणी रा चुंगट्या
➢	हीरा लाल शास्त्री	प्रत्यक्ष जीवनशास्त्र (आत्मकथा)
➢	हरिभाऊ उपाध्याय	युगधर्म, सर्वोदय की बुनीयाद, ओंदुम्बर व नवजीवन (समाचार पत्र) (समाचार पत्र)।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

- दोस्तों, राजस्थान PTI 3rd Grade 2022 (25 सितम्बर) की परीक्षा में हमारे नोट्स में से पेपर - I & 2 में 204 मार्क्स के प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 184.55 प्रश्न पर गयी थी/ (पेपर -I और 2 दोनों हमने youtube पर अलग अलग वीडियो में explain किया है)
- RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /

अन्य रिजल्ट -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/nc3moh

Online order – https://bit.ly/pti-2nd-notes